संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, सितंबर —2022, RNI-50756

विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम...

सहयोग 60/-

अपनी बात...

1987 के आरंभ का दौर था। जनसत्ता से एप्वाइंटमेंट लेटर मिलने की प्रसन्नता थी। यह प्रसन्नता इसलिए भी अधिक थी क्योंकि इसके माध्यम से मुझे सक्रिय और प्रतिष्ठित पत्रकारिता में वापस आने का मौका मिल रहा था। इन सब से बढ़ कर यह भी कि सरकारी संगठन में मेरे जैसे प्रोफाइल का कोई विशेष योगदान का रास्ता दिख नहीं रहा था।

जनसत्ता में चयनित होने के बारे में किसी को जानकारी नहीं दी थी मैंने। मेरा विवाह हो चुका था किन्तु पत्नी को भी यह सूचना नहीं दी थी।

एक की अल-सुबह रविवार दिल्ली के कश्मीरी गेट स्थित अंतरराज्यीय बस अड्डे से रोहतक की बस पकड़ी और दिन चढ़ते रोहतक पहुँच गया। जल्द ही मैं स्थानीय पत्रकारों के बीच में था। मुझे जनसत्ता से आया देख सब में उत्साह था। ऐसा उनके चेहरे से साफ दिखाई पड़ रहा था। जनसत्ता का अपना नाम और प्रभाव था। हरियाणा विधानसभा के चुनाव होने वाले थे। ताऊ देवी लाल मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार थे। रोहतक उन दिनों जाट बेल्ट का एक दुर्ग था।

साथी पत्रकारों ने मेरे आने की सूचना तुरंत इंडियन एक्स्प्रेस के स्थानीय संवाददाता को दे दी, वे भी थोड़ी देर में वहीं पहुँच गए। मैं अपना एप्वाइंटमेंट लेटर साथ लेकर गया हुआ था ताकि किसी को शक-शुबहा होने पर दिखाया जा सके।

दोपहर का भोजन वहीं पत्रकार बंधुओं के साथ हुआ उसके बाद इंडियन एक्स्प्रेस के संवाददाता मुझे अपनी मोटर साइकिल पर बैठा कर हर राजनैतिक पार्टी के कार्यालय लेकर गए और वहाँ मेरा यह कह कर परिचय कराया कि 'अब से जनसता केलिए यहाँ से सारी खबरे सुधेन्दु के माध्यम से ही जाएंगी वे जनसत्ता के संवाददाता हैं।' इसी दरम्यान उन्होंने मेरे अनुकूल एक आवास भी रोहतक की डिफेंस कॉलोनी में देख लिया।

इन सब के बीच शाम घिर आई तो उन्होंने मुझे दिल्ली केलिए बस पर बैठा दिया।

रोहतक में हुई आवभगत से दिल्ली लौटते समय मैं बहुत प्रसन्न था। यह रविवार का दिन था।

बस अड्डे से घर पहुंचा, मन में बहुत उत्साह था।

पिताजी बेड पर लेटे हुए आराम कर रहे थे।

मैंने उनके पैर छुए और जनसत्ता वाला पूरा विवरण बता दिया। यह भी कहा कि कल यानि सोमवार से मैं जनसत्ता जॉइन करने रोहतक जाना चाहता हूँ, निर्देश दें।

मेरे मन की बात सुन कर वे उठ बैठे। उनका एक ही वाक्य मेरी तमाम आशाओं को धूल-धुसरित कर गया। वे बोले 'यदि कालीदास बनना ही चाहते हो तो तुम्हें कोई नहीं रोक सकता।'

उनकी इस बात को रात भर सोचता रहा।

वे नहीं चाहते थे कि भेल का अधिकारी पद छोड़ कर जनसत्ता केलिए जाऊँ। कुछ हद तक वे यथार्थवादी थे।

भारी मन से मैंने पिताजी की बात मान ली और जनसत्ता का खयाल ही दिल से निकाल दिया। मेरे द्वारा जनसता न जॉइन करने पर आकाशवाणी में समाचार वाचक मेरे साथी अखिल मित्तल के भाई अनंत मित्तल जो उन दिनों जयपुर, नवभारत टाइम्स में थे ने मेरे स्थान पर आने का प्रयास किया था।

भेल में ठहरने के निर्णय के बाद भी पत्रकारिता का दामन छूट नहीं रहा था। पत्र-पत्रिकाओं में लेखन जारी रहा, आकाशवाणी से हिन्दी समाचार पढ़ना भी जारी रहा। दूरदर्शन कार्यक्रमों की एंकरिंग भी मिलती रही।

इसी दरम्यान पिताजी के सहयोगी डॉ महेश चंद गुप्त जी से मुलाक़ात हुई। डॉ गुप्त उन दिनों राजभाषा विभाग में निदेशक हिन्दी के पद पर कार्यरत थे। उनसे मिलने के बाद ही, उनके उत्साह बढ़ाने पर आपकी प्रिय पत्रिका 'सम्पर्क भाषा भारती' की वैचारिक नींव रखी गई।

मुझे सरकारी नौकरी में रह कर यह सब काम करने का कोई अनुभव नहीं था। उन्हों ने मेरा मार्गदर्शन किया।

पहले कोई समिति गठित करो। समिति को पंजीकृत करवाओ।

ऐसा करने के बाद आरएनआई में आवेदन देकर पत्रिका का नाम चुनो।

आरएनआई से नाम मिलने के बाद अपने ऑफिस को सूचित करो कि तुम पंजीकृट समिति की पत्रिका का सम्पादन करना चाहते हो। इसकी अनुमति लो।

इन सब औपचारिकताओं ने पूरा होने में सुविधा पूर्वक समय लिया।

वर्ष 1990 में संपर्क भाषा भारती के प्रकाशन संबंधी सारी औपचारिकताएँ पूरी कर ली गई। केंद्र में उन दिनों वीपी सिंह की सरकार थी।

सारा काम मुझ अकेले को ही करना था। और वह काम किया भी.....शेष फिर....

सादर,

सुधेन्दु ओझा

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

अनुक्रमणिका सितंबर—2022

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या
1.	संपादकीय		2
2.	अनुक्रमणिका		3
3.	कविता	तृप्ति मिश्रा	4
4.	कविता	राजपाल सिंह गुलिया	4
5.	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्रा	4
6.	समाचार	डाक विभाग वाराणसी : हर घर तिरंगा	5-6
7.	हीरोइनों की प्रेग्नेंसी की सुर्खी	सोनम लववंशी	7 व 12
8.	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्रा	7
9.	समाचार : रामपुर बुशहर में प्रबुद्धजन संगोष्ठी	चंद्रकान्त पाराशर	8
10.	कहानी : श्यामला	रामानुज अनुज	9-11
11.	कविता :	अंकुर सिंह	12
12.	कविता	अशोक तिवारी	13
13.	कविता	विनय बंसल	13
14.	कविता	केशव शरण	13
15.	लघुकथा	सीताराम गुप्ता	14
16.	राष्ट्राध्यक्ष को समर्पित : दोहे	विनोद बेगाना	14
17.	कविता : खिलौने	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	14
18.	पुस्तक समीक्षा : बादल तुम मत चाँद.....	सुरेश प्रजापति	15-17
19.	शिक्षक दिवस विशेष :	आकांक्षा यादव	18-20
20.	विज्ञान व्रत की ग़ज़लें	विज्ञान व्रत	21
21.	आलेख : खुद को चाहने...	सोनम लववंशी	22
22.	लघुकथा : चल भाग यहाँ से	दिलीप कुमार	23
23.	समाचार :	अनुपमा अनुश्री	24
24.	कविता	व्यग्र पाण्डेय	24
25.	हिन्दी दिवस विशेष	कृष्ण कुमार यादव	25-29
26.	समाचार : हिप्र विश्वविद्यालय	चंद्रकान्त पाराशर	29
27.	अन्तर्मन	शील निगम	30
28.	ग़ज़ल	रामानुज अनुज	30
29.	कविता	अनिल कुमार मिश्रा	30
30.	लघुकथा : समर्पण	सीता राम गुप्ता	31
31.	कविता	अंकुर सिंह	32
32.	कविता	आलोक रंजन	32
33.	कविता	डॉ मनोहर अभय	32
34.	लघुकथा :	सूर्यदीप कुशवाहा	33
35.	कविता	व्यग्र पाण्डेय	33
36.	अपनी-अपनी मैराथन दौड़.....	श्यामल बिहारी महतो	34

नारी भक्षी एक नई प्रजाति

कई प्रजाति लुप्त हुई तो
कई हैं नई आ गई
एक प्रजाति ऐसी आई
जो नारी को है खा गई

जब इनके क्रोमोजोम बदले
यह वहशी बन कर आए हैं
देशकाल सीमा से परे
यह सारी दुनिया में छाए हैं

नारी की अस्मिता से खेल
यह अपनी भूख मिटाते हैं
दिखते लगभग नर के जैसे
यह नारीभक्षी कहलाते हैं

छेड़छाड़ से बलात्कार तक
इनमें नहीं सबूरी है
नवजात बालिका युवती बूढ़ी
बस नारी होना जरूरी है

कब कहाँ और करें कैसे
बस यह मौका तकते हैं
दुष्कर्म में लिप्त ये प्राणी
कभी नहीं यह थकते हैं

विडंबना है बड़ी देश की
यह अक्सर पकड़े जाते हैं
पर मानसिक विकृत बनकर
यह जमानत पा जाते हैं

क्योंकि कुछ नारीभक्षी बन जाते
खैर ख़्वाब इन लोगों के
अपने कुनबे को बचाने को
केस भी इनके सालों लड़ते

सियासत और कानून के बीच
अस्मिता आत्मसम्मान खोती है
नारीभक्षी के पंजों में
अब
मानवता भी रोती है
मानवता भी रोती है

तृप्ति मिश्रा

खबर सुता की सुनकर उस दिन,
ज़ारज़ार थी रोई अम्माँ.
सारी रात कटी चिंता में,
नहीं तनिक भी सोई अम्माँ.

याद अभी तक है अम्माँ को,
कोख पड़ी थी जिस दिन धनिया.
सास ससुर संग पतिदेव भी,
चाह रहे थे मोती मनिया.
वही अड़ा था भ्रूण जाँच को,
जिस पर थी मुँह धोई अम्माँ.

घर भर को ही भाती थी वह,
जब जब सुता करे शैतानी.
बढ़ी समय से होड़ लगा कर,
पढ़ लिख कर फिर हुई सयानी.
घर वर की चिंता में हरदम,
रहती थी बस खोई अम्माँ.

रूप दिया पर किस्मत लिखते,
लगता जैसे रूठा दाता.
गुरबत और कलह से इसका,
जन्म जन्म का जोड़ा नाता.
हरे किसी की पीर कौन कब ,
कौन करे दिलजोई अम्माँ.

आज सुबह ही खबर मिली ये,
धनिया हुई राम को प्यारी.
घूम रही हैं चलचित्र सी,
विस्मृत थी जो बातें सारी,
सिवा तुम्हारे इसे मानता,
दुर्घटना हर कोई अम्माँ.

राजपाल सिंह गुलिया

फर्जी

बन गई हैं दादी बी॰ डी॰ सी॰

बैठा विकास की मीटिंग में
बिन आँख कान का देशी घी

कहते हैं परिवर्तन आकर
सारी तस्वीर बदल देगा
पर दादी पोते ने मिलकर
दिखलाया नियमों को ठेंगा

रोते रहते हैं प्रावधान
उड़ती रहती जिनकी धज्जी

जल रही बड़ी मजबूती से
इस लोकतन्त्र की बाती है
जिस मुद्दे पर कहता पोता
दादी बस हाथ उठाती है

आड़ा तिरछा टेढ़ा मेढ़ा
हर चाल चल रहा है फर्जी

है गति विकास की बहुत तेज
आँकड़े कह रहे सरकारी
हर तबके ने तय कर ली है
अपनी अपनी हिस्सेदारी

सबकी अपनी अपनी दुनिया
सबकी अपनी अपनी मर्जी

सूर्य प्रकाश मिश्र

डाक विभाग ने ठाना है,हर घर तिरंगा पहुँचाना है

पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

'आजादी का अमृत महोत्सव' पर 'हर घर तिरंगा' अभियान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए डाक विभाग ने 5 अगस्त को वाराणसी में प्रभात फेरी के माध्यम से जन जागरूकता अभियान चलाया। वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने हरी झंडी दिखाकर इसे विशेश्वरगंज स्थित प्रधान डाकघर वाराणसी से रवाना किया और इसका समापन गंगा तट के नमो घाट (खिड़किया घाट) पर हुआ। प्रवर डाक अधीक्षक श्री राजन राव, डाक अधीक्षक श्री पीसी तिवारी, सहायक निदेशक श्री ब्रजेश शर्मा, सीनियर पोस्टमास्टर श्री सी.एस बरुआ, कैंट पोस्टमास्टर गोपाल दुबे सहित 200 से अधिक डाक अधिकारियों और कर्मचारियों ने इसमें भागीदारी की और लोगों को 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज लगाने और डाकघरों से तिरंगा खरीदने के प्रति प्रेरित किया। भारत माता की जय, वंदे मातरम, डाक विभाग ने ठाना है-हर घर तिरंगा पहुँचाना है, हर घर तिरंगा-हर मन तिरंगा, आपका दोस्त-इण्डिया पोस्ट, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा-झंडा ऊँचा रहे हमारा के ओजस्वी उद्घोष के बीच गुंजायमान होता डाक विभाग का यह अभियान विशेश्वरगंज, मछोदरी पार्क, बिड़ला हॉस्पिटल, गायघाट, काशी रेलवे स्टेशन, स्वामी नारायण मंदिर, प्रहलाद घाट, राजघाट से होते हुए नमो घाट पहुँचा। रास्ते में सड़क किनारे दुकानों और घरों से बाहर निकल बनारस की जनता ने भी नारों में सुर मिलाया और 'हर घर तिरंगा' अभियान के प्रति अपना उत्साह व्यक्त किया। बीच-बीच में आम जनता को राष्ट्रीय ध्वज फहराने के सामान्य नियम की भी जानकारी दी गयी।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि, 'आजादी का महोत्सव' के तहत 'हर घर तिरंगा' अभियान में डाक विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डाकघरों के माध्यम से शहरों के साथ-साथ सुदूर ग्रामीण अंचलों में भी तिरंगे की मात्र 25 रूपये (जीएसटी सहित) में बिक्री की जा रही है। 20 इंच x 30 इंच आकार का पालिएस्टर से बना यह तिरंगा ई पोस्ट ऑफिस पोर्टल www.epostoffice.gov.in के माध्यम से भी ऑनलाइन भुगतान करके घर बैठे ही बिना किसी होम डिलीवरी चार्ज के प्राप्त किया जा सकता है। व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु जहाँ डाकिया क्षेत्र में डाक बाँटते समय लोगों को 13 से 15 अगस्त तक अपने घरों में तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, वहीं सोशल मीडिया पर भी डाक विभाग द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। यह अभियान देश भक्ति की सामूहिक चेतना को घर-घर पहुँचाने का कार्य कर रहा है। श्री यादव ने कहा कि जिन संस्थाओं या व्यक्तियों को बल्क में तिरंगों की ख़रीद करनी हो, वो नजदीकी डाकघर में अपनी डिटेल्स के साथ आवेदन दे सकते हैं। उन्हें भी शीघ्र ही तिरंगे झंडे की आपूर्ति की जाएगी। वाराणसी परिक्षेत्र के डाकघरों से सवा दो लाख तिरंगों की बिक्री का प्राथमिक लक्ष्य है, जिनमें से 47 हजार झंडे डाकघरों के काउंटर्स पर उपलब्ध करा दिए गए हैं।

प्रभात फेरी में वाराणसी पूर्वी मंडल के प्रवर डाक अधीक्षक राजन राव, डाक अधीक्षक पीसी तिवारी, सहायक निदेशक ब्रजेश शर्मा, सीनियर पोस्टमास्टर सी.एस बरुआ, कैंट पोस्टमास्टर गोपाल दुबे, सहायक अधीक्षक एसके चौधरी, आरके चौहान, एमआर रश्दी, अजय कुमार मौर्या, डाक निरीक्षक श्रीकांत पाल, रमेश यादव, इंद्रजीत पाल, सर्वेश सिंह, इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक मैनेजर सुबलेश सिंह, श्रीप्रकाश गुप्ता, श्रवण कुमार सिंह, सी.अनिथा, अजिता, मनीष कुमार, राजेंद्र यादव, विवेक कुमार, जगदीश चंद्र सडेजा, भूपेंद्र कुमार, विश्वनाथ, हरिशंकर यादव सहित शहर के डाकघरों के तमाम पोस्टमास्टर, डाकिया और अन्य कर्मी शामिल हुए। - **(ब्रजेश शर्मा), सहायक निदेशक, कार्यालय - पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी -221002**

हीरोइनों का प्रेग्नेंट होना सुर्ख़ी में क्यों

आजकल फिल्मी ख़बरों में रूचि रखने वाले पाठकों को फिल्मों की नई जानकारियों के अलावा ये सुर्खियां भी पढ़ने को मिलने लगी कि कौनसी हीरोइन कब, किससे शादी कर रही है और वो कब प्रेग्नेंट हुई! किसी हीरोइन का प्रेग्नेंट होना वास्तव में पाठकों की रूचि में शामिल नहीं होता, पर उनके सामने ये सब परोसा जाने लगा है! हीरोइनें फोटो शूट करवाकर उसे इस तरह ग्लैमराइज़ करने लगी, जैसे ये उनकी किसी काबलियत का हिस्सा हो! इसके पीछे वजह चाहे जो बताई जाए, पर ये एक पूरे प्रचार तंत्र का मसालेदार फार्मूला है, जिसे सुर्ख़ियों की तरह मीडिया में परोसा जाने लगा! क्या ये प्रतिद्वंदिता है या कुछ और!_

- सोनम लववंशी

आलिया भट्ट और रणबीर कपूर की शादी को अभी ज्यादा दिन नहीं हुए जब बॉलीवुड में उनकी शादी की धूम मची थी! दोनों बॉलीवुड के प्रतिष्ठित परिवार से हैं, इसलिए शादी भी उसी शालीनता से हुई! ज्यादा शोर-शराबा नहीं हुआ, जैसा अमूमन ऐसी शादियों के समय होता है या किया जाता है। लेकिन, अभी इस शादी का शोर थमा भी नहीं था कि आलिया के प्रेग्नेंट होने की ख़बर सामने आई! देखा जाए तो ये जीवन की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है। शादी हुई तो परिवार भी बढ़ेगा! लेकिन, बॉलीवुड में इसे प्रचारित करने की नई परंपरा शुरू हो गई! आलिया भट्ट ही नहीं पिछले कुछ सालों में हर हीरोइन प्रेग्नेंसी को ग्लैमराइज़ करने लगी है। लगता है प्रेग्नेंसी के जरिए खुद को ख़बरों में बनाए रखने का हीरोइनों को एक नया बहाना मिल गया।

फ़िल्मी दुनिया का ट्रेंड है कि जैसे भी हो, अपने आपको मीडिया में बनाए रखा जाए! क्योंकि, ये दुनिया पूरी तरह चर्चाओं के नींव पर टिकी है। जो हीरो या हीरोइन खुद को जितना चर्चा में बनाए रखेगा, उसकी दुकान उतनी अच्छी चलेगी! फिर वो चर्चा सकारात्मक हो या नकारात्मक उससे फर्क नहीं पड़ता! कभी अफेयर के मनगढ़ंत किस्सों से ख़बरों में बने रहा जाता है, फिर शादियों के बहाने और अब हीरोइन की प्रेग्नेंसी को ग्लैमराइज़ करना नया शिगूफा बन गया। जबकि, वास्तव में दर्शकों को इन सबसे कोई फर्क नहीं पड़ता! अब वो दौर भी नहीं रहा कि किसी हीरोइन के प्रति दर्शकों को इस हद तक लगाव हो! फिर क्या कारण है कि बड़ी से लगाकर छोटी-छोटी हीरोइन भी अपनी प्रेग्नेंसी को किसी उपलब्धि की तरह प्रचारित करने की कोशिश में रहती हैं।

बात सिर्फ आलिया भट्ट तक ही सीमित नहीं है! इससे पहले अनुष्का शर्मा, करीना कपूर, सोनम कपूर, दीया मिर्ज़ा, प्रियंका चोपड़ा, मीरा राजपूत और नेहा धूपिया समेत कई हीरोइनें ऐसे मामलों में अपने आपको प्रचारित कर चुकी हैं! जबकि, नेहा धूपिया इतनी चर्चित एक्ट्रेस नहीं हैं कि उनके प्रेग्नेंट होने की खबर सुर्खियां बनेगी, पर ये सब हो रहा है। मीरा राजपूत कोई हीरोइन नहीं हैं। उनकी पहचान शाहिद कपूर की पत्नी तक सीमित है, पर उन्होंने भी अपनी दूसरी प्रेग्नेंसी को सुर्खी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी! जबकि, हिंदुस्तानी परंपरा में ऐसी बातों को कई तक दिनों तक छुपाया जाता है। घरों की बड़ी-बूढ़ी महिलाओं का कहना था कि ये औरत का दूसरा जन्म होने जैसी घटना है, इस तरह की बातें सबके सामने नहीं की जाती! क्योंकि, ज़माने की नजर लग जाती है! ये बात कितनी सच है, ये तो नहीं कहा जा सकता, पर सामान्य तौर पर इसे बताने से बचा जाता है।

पर, फ़िल्मी दुनिया में ऐसी ख़बरों के लिए अस्पताल से घर आने का भी इंतजार नहीं किया जाता। आलिया भट्ट के बारे में जब ये

शेष पृष्ठ 12 पर

बगुलों का घर

रोज रोती है कोयल हरे पेड़ पर
जिस पे निर्माण बगुलों का घर हो गया

उड़ गये और पंछी न जाने कहाँ
बाग की सारी रौनक खतम हो गई
जिस सफेदी पे सबको बहुत नाज था
सिर पे ऐसी चढ़ी बेशरम हो गई

था हरा रंग जिस बाग की खासियत
उसकी पहचान बगुलों का घर हो गया

बाग में होने वाली सुरीली सुबह
इस नये दौर में घुट के जीती मिली
सिलसिला चीखने का चलन बन गया
बेसुरी हो गई गीत की हर गली

कोई रोये या गाये जिये या मरे
इससे अंजान बगुलों का घर हो गया

सूखने लग गईं पेड़ की पत्तियाँ
टहनियाँ दुःख से बेजान होने लगीं
देखा जब से गिलहरी को जाते हुए
डालियाँ अपनी किस्मत पे रोने लगीं

फिर भी बोला न कुछ चुप रहा बागबाँ
इतना बलवान बगुलों का घर हो गया

सूर्य प्रकाश मिश्र

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रामपुर द्वारा समभाव समरसता का संदेश देती प्रबुद्धजन संगोष्ठी सम्पन्न

-चन्द्रकान्त पाराशर, खनेरी शिमला हिल्स

गत सप्ताह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रामपुर (हिमाचल प्रदेश)द्वारा "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका " विषय पर उप मंडलाधिकारी श्री सुरेंद्र मोहन की अध्यक्षता में आयोजित प्रबुद्धजन संगोष्ठी का सुअवसर था,जिसमें मुख्य वक्ता प्रांत बौद्धिक प्रमुख डा०सेवक राम जी थे ।

कार्यक्रम शुरू होने के क्रम में मंच पर मि०पुष्प राज ने आगंतुक बुद्दिजीवियों को राष्ट्रीय यस्वयं सेवक संघ की मूल अवधारणा से जोड़ने व देश-प्रेम की भावना को जागृत करने के लिए स्व०डा०चन्द्रकान्त भारद्वाज जैसी देवतुल्य पुण्यात्मा द्वारा रचित गीतों की शृंखला में से सस्वर"चंदन है इस देश की माटी,तपो भूमि हर ग्राम है...जैसे गीतों को गाना शुरू किया;पीछे समवेत स्वर से उपस्थित आगंतुकों ने भी साथ दिया ..वातावरण देश-भक्ति के जोश व उत्साह से परिपूर्ण हो गया ।

सर्वप्रथम एस ड़ी एम महोदय श्री सुरेंद्र मोहन ने व्यक्ति व समाज के सतत उत्थान हेतु परस्पर सहयोग व समझ की भावना होने पर बल दिया ।रामपुर परिक्षेत्र में कार्यरत विभिन्न अन्य सरकारी,सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस गोष्ठी में भाग लिया जैसे: ईश्वरीय ब्रह्मकुमारी,राधास्वामी सत्संग,निरंकारी मिशन,चिकित्सा-सेवा,जल विद्युत परियोजना अधिकारी,राज्य विभाग और सेवानिवृत प्रबुद्धजन ।

समारोह के संयोजक विनय शर्मा ने बताया कि संघ सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन के रूप में अपने समाज को संगठित व संस्कारित करने में नियमित रूप से प्रतिबद्धता दर्शाते हुए प्रासंगिक विषयों पर चिंतन-मनन करता रहता है ।यह संगोष्ठी उसी का एक आयाम है ।

मुख्य वक्ता डा सेवक राम जी द्वारा संघ की मूल अवधारणा ,सामाजिक समरसता के विभिन्न सरोकारों को बहुत ही सारगर्भित ढंग से साधारण स्पष्ट भाषा में व्यक्त किया गया। इस अवसर पर ब्राह्मण सभा से श्री नन्द लाल शर्मा, श्री ललित मोहन शर्मा; निरंकारी मिशन से निर्मल सोनी; रिटायर्ड प्रिंसिपल श्री खुशाल ठाकुर, श्री पन्ना लाल गुप्ता; श्री चन्द्रकान्त पाराशर खनेरी शिमला हिल्स; रिटायर्ड कमांडेंट एसएसबी श्री ओगाम राम; रिटायर्ड कमांडेंट श्री नरोत्तम शर्मा; कर्नल रविकांत; श्री खंड सेवा समिति अरसू से श्री गोविंद शर्मा; ब्रह्म कुमारीय संस्था से बहन डोलमा इत्यादि की गरिमामय उपस्थिति रही । समग्र धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

रामानुज अनुज

श्यामला

चंद्रदेव आज धरती का सम्पूर्ण विचरण की इच्छा लेकर निकले थे। जल-थल, खेत गली, मैदान, दरख़्त, पहाड़, किला, खण्डर, झुग्गी-झोपड़ी सब को आज अपनी दूधिया चांदनी से नहला देना चाहते थे। गगन सुंदरी श्यामला के साथ लुका-लुकौहल खेलते हुये जब वे रावी तट पर पहुँचे, उनके विशाल नयन उस अद्भभुत दृश्य पर ठहर-से गये। पानी-बीच विशाल नेत्राकर नौका में सवार दो पूर्णतया नग्न युगल चुल्लू में पानी भर-भर एक दूसरे पर उलीचते हुये अठखेलियाँ कर रहे थे। प्रथम दृष्टि में वे धरती से इतर अन्य लोक से आये हुये लग रहे थे। उनके कर्ण कुण्डल से प्रस्फुटित दिव्य ज्योति से पानी का बहुत सा भाग प्रकाशवान था। रात्रि में स्वभावगत शांत रहने वाला रावी का सस्य-शीत-धवल वारि अशांत लग रहा था।

"उधर देखिए देव! अद्भुत..अद्भुत।"

"स्पष्ट देख रहा हूँ, श्यामला।"

"उनके नजदीक चलिए देव।"

'नहीं श्यामला, यहीं से देखो, ज्यादा पास जाने से हो सकता है, वे अदृश्य हो जाएं, वे मानवी भले नहीं हैं, उनमें लज्जा अवश्य होगी। एकांत देखकर ही जलक्रीड़ा में निमग्न है। उनकी निजता भंग हो सकती है। क्रोधित होकर वे मेरा अनिष्ट कर सकते हैं।"

"अनिष्ट??"

"हाँ देवि! हम धरती के हितार्थ आये हुए हैं, किसी को किंचित भी क्लेश पहुँचना मेरा उद्देश्य नहीँ है।"

"देव! मैं समझ गयी, आप उन प्रेमियों से डरते हैं।"

"नहीं देवि! भयभीत होने या न होने का प्रश्न नहीं है, वे प्रेम-क्रीड़ा में निमग्न हैं। पवित्र प्यार के मिलन-पल को कामदेव अपने दिव्य आभामण्डल से चारो दिशाओं में दूर-दूर तक रक्षा प्रदान करते है। उनके द्वारा रक्षित रेखा को स्पर्श करना खतरे को आमंत्रित करना है।" चंद्रदेव शांत भाव से बोले।

"लेकिन कामदेव तो भगवान महाकाल की क्रोधाग्नि में भष्म हो गये थे?" चन्द्रदेव के ज्योतित आमुख को स्याह शीश लटों से ओट में करती हुयी श्यामला बोली।

"हाँ! देवि, यह सच है, लेकिन निराकार कामदेव की शक्ति अभी क्षीण नहीं हुयी है। देवी रति की सम्पूर्ण नारी शक्ति उन्हें प्राप्त है, वे अत्यंत बलवान हैं।" श्यामला के श्यामल लटों को आमुख से हटाते हुए चन्द्र देव बोले।

"वो क्या?? उधर दृष्टि फेरिये देव, अब वे दोनो एकाकार होकर जोर-जोर से सांस छोड़ रहे है। परिणाम सामने है, नौका तीव्र गति से दोलित हो रही है, पानी से तेज तरंगे उठ रही हैं। क्या वे रावी के अथाह जल में समाधि ले लेंगे?"

"हमें यहाँ से चलना चाहिए।" श्यामला के

बोलों से निःसृत काम के अपुष्ट संकेतों को निकटस्थ आया देखकर चंद्रदेव भयभीत होकर बोले।
"चलिए, चलने के अलावा और क्या आता है, आपको? कब करेंगे मुझसे इस तरह का प्यार? मैं भी उन्हीं की तरह प्यार सागर में डूब जाना चाहती हूँ। अपनी सहस्त्र शीतल किरणों से मुझे कसकर समेट लीजिए देव, मेरे पूरे बदन में अग्नि का संचार हो रहा है। मैं अपना समूचा अस्तित्व आपको प्रतिदान कर देना चाहती हूँ। मुझे स्वीकार कीजिये देव, अन्यथा...??"
"अन्यथा क्या??"
'प्रश्न नहीँ बनता, आपको मालुम है, मेरी मृत्यु तय है।"
"नहीं-नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।"
चंद्रदेव जोर से चीख उठे थे।उनकी तीव्र बुद्धि कुंठित हो चली थी। वे स्वयं को अनिर्णय की स्थिति में पा रहे थे। क्या करें, क्या न करें। यदि श्यामला के साथ सम्बन्ध बनाते हैं तो उनका संकल्प टूटेगा, नहीँ बनाने की स्थिति में श्यामला की मृत्यु हो जाएगी और उनके ऊपर नारी हत्या का पाप लगेगा। वे ऊपर की ओर नजरें टिकाकर जोर से बोले..."हे देवों के देव महादेव! मेरा मार्ग प्रशस्त कीजिये, दुविधा के भ्रमर से मुझे शीघ्र बाहर निकालिए।"
"चंद्रदेव!! नारी की भावनाओं का तिरस्कार करना उचित नहीं। नारी समादर से कोई पाप का भागी नहीं बनता है। दुविधा के भाव तुम्हारी तुच्छ समझ की उपज हैं।"
महादेव की सुदूर से चली आवाज चंद्रदेव के कानों तक पहुँच चुकी थी, अशांत मन को शांति मिल गयी थी। इधर श्यामला के धीरज का बाँध टूट चुका था। वह चंद्रदेव से ऐसे लिपट गयी थी कि धरती में अंधकार छा गया। तारक गण और नीहारिकायें विस्मय लिए एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि चंद्रदेव समय पूर्व धरती से चन्द्र किरणें क्यों समेट लिए?? सर्वमान्य उत्तर किसी के पास नहीँ था। पानी की उष्ण बूंदे श्यामला के विशाल नेत्रों से निकलकर चंद्रदेव के विशाल वक्षस्थल को धोती हुयी धरती का आँचल गीला करने लग गयीं थी।
चंद्रदेव तनिक झुंझलाकर शांत मन से बोले..."तुममें काम का उद्दाम प्रभाव साफ दिख रहा है। कदाचित यह उचित समय नहीँ है। तारे गण जागे हुये कार्य में हैं, निहारिकायें ज्योतिष की किताब खोले हुये भूत-भविष्य देख रही हैं। आकाश-पथ गामियों के लिए रात्रि जागरण का काल होता है। भगवान भाष्कर हमारे भरोसे ही क्षितिज में विश्राम कर रहे हैं। कामाग्नि को स्वयं की जल बूंदों से अभी ठंडी कर लो। तुम्हारा प्रणय-निवेदन मुझे स्वीकार है, तुम्हारी भावनाओं के आगे नतमस्तक हूँ--- देवि! परन्तु समय का विचार करो, हर काम उचित अवसर पर शोभित होते हैं, कदाचित यह उचित समय नहीं है।"
"देव! ज्ञान की बातें करनी मुझे भी आती हैं। लेकिन बड़ी-बड़ी बातों से क्षुधा शांत होने की बजाय और बढ़ती है। भोजन ग्रहण करने से पेट की क्षुधा शांत होती है, भोजन-दर्शन से या भोजन की बात करने से नहीं होती, वल्कि क्षुधा और बढ़ जाती है। देव! मैं आपकी प्रेयसी हूँ, इसमें उचित-अनुचित, समय-कुसमय का विचार कैसा?"
बचाव के सभी रास्ते अवरुद्ध देखकर चन्ददेव श्यामला को साथ लिए रावी नदी के अगाध जल-राशि में डूब गये। प्रहर बीते काम का प्रचंड वेग शांत हो चला था। चन्द्र किरणें पुनः धरती के विस्तृत आँचल में पूर्व की तरह विचरण करने लगीं थी। आकाश पथिकों की ठहरी हुयी साँसे पुनः चलने लगी थी। वह नौका भी अब दृष्टि राडार से ओझल हो चुकी थी,

जिसमे सवार प्रेमी युगल प्रेमालाप करते हुए कुछ देर पहले देखे गये थे। श्यामला के चेहरे की आकुलता गायब थी, अब वह शांत मन से बैठी हुयी धरती की तरफ निहारने लगी थी।
"क्या देख रही हो देवि।" उसके श्यामल लटों पर उँगलियों से पेंचाकृति बनाते हुये चंद्रदेव बोले।
"देव! प्रत्यक्षतः आंखें धरती की सुंदरता निहारती प्रतीत होती हैं, लेकिन यह पूर्ण सत्य नहीँ है।"
"तो??"
"देव आप सामर्थ्यवान है, स्वर्गलोक की बैठक में आप जाते हैं। मेरे देवता 'वरुण' तो मुँह सिये हुये हैं। हमारी समस्याएं वे बैठक में नहीं रख सकते। उन्हें डर है कि समस्याएं बताने से मंत्रिमंडल से निष्काषित कर दिए जाएंगे।"
"ऐसी क्या बात है देवि! खुलकर बताओ, जनहिताय-जनसुखाय बात होगी तो हल्ला बोल दूँगा। इंद्र का जीना हराम कर दूँगा। कालो के काल महाकाल की जटाओं में निवास करने वाला देव हूँ, सच बोलने और सच-पथ-अनुगमन करने में मुझे कोई भय नहीँ है।"
श्यामला पुनः सन्निकट आ गयी थी, वह चंद्रदेव के आंखों की गहरायी में उतर कर बोली---"देव, आपको मालुम है, आये दिन धरती में, जल प्लावन, बाढ़ सूखे की स्थिति बन रही है। इस विषय पर क्या किसी ने कभी सोचा? कभी चिंतन-मनन हुआ? वरुण देवता सारा दोष हम बदलियों के ऊपर मढ़ते हैं, जबकि हम निर्दोष हैं।"
"संतुलित जल वृष्टि का कार्य तो देवि तुम्हारी विरादरी का ही है?"
"देव! कर्तब्य बोध हमें हैं, लेकिन हम क्या करें, सूर्य के बढ़ते ताप से हमारे बादल कमजोर हो गए है। दिन-ब-दिन उनकी शक्ति क्षीण होती जा रही है। धरती में हमारे काफिले कभी पेड़ो में, कभी पर्वत-पहाड़ियों में ठहरते थे, वहीं हमारा विश्राम भी होता था, जल वृष्टि की योजना भी बनती थी। धरती वासियों ने पेड़ काट डाले हैं, पहाड़ो की छाती चीरकर सड़कें और रेल पटरियां बिछा दी गयी हैं। बताइए हम कहाँ आश्रय लें, इधर से उधर दौड़ते हुए हम थक जाते हैं, दिमाक विचार शून्य हो जाता है। ऐसे में ग़लतियाँ जरूर होगी।"
"उचित कह रही हो देवि!"
'एक बड़ी चिंता की बात यह भी है, बादलों में काम की चाहत कम गयी है, बहुतों में संतानोत्पत्ति की शक्ति चली गयी है। ऐसे में हमारी जाति का अंत हो जाएगा। प्यासी धरती को फिर कौन पानी देगा? धरती वासी प्यास से तड़फ-तड़फ कर मर जायेंगे। धरती से जन-जीवन समाप्त हो जायेगा।"
श्यामला की बात सुनकर चंद्रदेव सोच में पड़ गये। उन्हें कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। वास्तव में समस्या का हल धरती वासियों के पास है, जहां देवताओं की हुकूमत नहीं चलती है। यदि वे समय रहते नहीँ चेते तो वे मरेंगे ही, हम लोग भी नहीं बचेंगे।"
"क्या सोचने लगे देव।"
'वही बात जो तुमने अभी-अभी कही, हम मुद्दे को बैठक में जरूर उठाएंगे।" "अब हमें चलना चाहिये---प्राची में सूरज के घोड़े रथ साजे तैय्यार खड़े हैं, भगवान भाष्कर आते होंगे। कल फिर मुलाकात होगी।"
"शुभ बिदा देवि।"
"शुभ बिदा देव।"

पृष्ठ 7 का शेष

चर्चा सामने आई तो साथ में अस्पताल का सोनोग्राफी कराते हुए ही फोटो चस्पा था। लेकिन, इससे उन्हें क्या हासिल हुआ, शायद वे खुद भी नहीं जानती! अपनी प्रेग्नेंसी की बात मीडिया में लाने तक ही यह मसला सीमित नहीं है! हीरोइनें इस अवस्था के फोटो शूट करवाकर उसे फिल्मी पत्रिकाओं में फिल्मों के पोस्टर की तरह भी छपवाने लगी। फोटो में उनके पति और परिवार भी शामिल होते हैं, जैसे कोई अजूबा काम हुआ हो!

दरअसल, ये सब सहज और स्वाभाविक बात नहीं है कि अपनी खुशियों में सबको हिस्सेदार बनाया जाए! वास्तव में ये पब्लिसिटी की अंधी दौड़ का एक ऐसा हिस्सा है, जिसके पीछे एक पूरा तंत्र काम कर रहा है। फ़िल्मी हस्तियों के साथ एक पब्लिसिटी सिस्टम काम करता है, जो उनकी हर गतिविधि में खबर ढूंढता है और उसे दुनिया के सामने लाता है ताकि उनका क्लाइंट चर्चा में बना रहे! ये सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। पीआर एजेंसियां, फिल्म पत्रकार, फ़िल्मी पत्रिकाएं, पेशेवर फोटोग्राफर और इस तरह के कई लोग इसमें लगे होते हैं और सबकुछ प्रोफेशनली मैनेज किया जाता है।

पेरेंट्स बनना जीवन का एक बहुत अनोखा और अच्छा अनुभव होता है। परदे पर पेरेंट्स का किरदार निभाने और असल जिंदगी में पेरेंट्स बनने में बहुत फर्क है। लेकिन, क्या जरूरी है कि जीवन के इस बदलाव को सबके साथ शेयर किया जाए। सोनम कपूर की गिनती भी बड़ी एक्ट्रेस में नहीं होती। उन्हें आज भी अनिल कपूर की बेटी की तरह याद किया जाता है। लेकिन, जब वे प्रेग्नेंट हुई, तो अख़बारों और फ़िल्मी पत्रिकाओं के पन्नों का हिस्सा बन गई! बेबी बंप पर हाथ रखे फोटो दिखाई दिए! यही स्थिति नेहा धूपिया, कोंकणा सेन शर्मा और दीया मिर्जा की भी है। इन्हें इनके फिल्म करियर के लिए तो कम ही पहचाना जाता है, पर ऐसी गैर-फिल्मीं ख़बरों से वे अपने आपको चर्चा में बनाए रखने की कोशिश जरूर करती रहती हैं।

याद किया जाए तो 80-90 के दशक से पहले की किसी भी हीरोइन के बारे में कभी ऐसी कोई बात सामने नहीं आई! वैजयंती माला, आशा पारेख, वहीदा रहमान के कितने बच्चे हैं, क्या ये बात किसी को आज भी पता है! माधुरी दीक्षित के दो बेटे हैं, ये बात उनके अमेरिका से इंडिया आने से पहले किसको पता था! जूही चावला, रवीना टंडन और श्रीदेवी ने कब किसी को अपने प्रेग्नेंट होने की सूचना दी और प्रेग्नेंसी के फोटो छपवाए! इसलिए कि तब किसी हीरोइन को अपनी फिल्मों के अलावा निजी जिंदगी को प्रचारित करने की जरूरत नहीं थी! जबकि, आज प्रतिद्वंदिता के साथ असुरक्षा की भावना भी हीरोइनों को परेशान करने लगी है। उन्हें लगता है कि यदि साल-डेढ़ साल वे सुर्ख़ियों में नहीं रहीं तो अभिनय की दौड़ से उन्हें बाहर कर दिया जाएगा! लेकिन, इसके साथ प्रचार तंत्र का एक पूरा बाजार खड़ा हो गया! देखना है कि ये बाजार कब तक जिंदा रहता है! वैसे जब पहली बार साल 1991 में हॉलीवुड अभिनेत्री डेमी मुर ने मशहूर मैगज़ीन वैनिटी फेयर के कवर पेज के लिए अपने बेबी बम्प के साथ निर्वस्त्र फ़ोटोशूट करवाया तो दुनिया मे यह चर्चा का विषय बन गया था। बेशक यह किसी अभिनेत्री का बेबी बंप के साथ निर्वस्त्र पहला फोटोशूट था। लेकिन वर्तमान दौर पर हम नजर डाले तो आज यह फैशन बन गया है और यह हॉलीवुड से लेकर बॉलीवुड तक की हीरोइनों के लिए फोटोशूट कमाई का जरिया भी बन गया है, लेकिन यह सामाजिक रूप से शुभ संकेत नहीं। आख़िर छिपाने की चीज भी दिखाई जाने लगी। फिर यह समाज किस ओर जाएगा। आप सहज समझ सकते।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

विश्वकर्मा भगवान

तकनीकी कला के ज्ञाता,
देवालय, शिवालय के विज्ञाता।
सत्रह सितम्बर हैं जन्म दिवस,
कहलाते शिल्पकला के प्रज्ञाता।।

कला कौशल में निपुण,
बनाए सोने की लंका,
विश्वकर्मा भगवान तो है,
सभी देवों के अभियंता।।

शिल्प कला के है जो ज्ञाता,
विष्णु वैकुंठ के हैं निर्माता।
कहते हम प्रभु दो हमको ज्ञान,
क्योंकि हमें कुछ भी नहीं आता।।

पृथ्वी, स्वर्ग लोक के भवन बनाए,
विष्णु चक्र, शिव त्रिशूल तुम्हीं से पाए।
किए सब देवन पर कृपा भारी,
पुष्पक दें कुबेर को किए विमान धारी।।

इंद्रपुरी, कुबेरपुरी और यमपूरी बनाए,
द्वारिका बसा कृष्ण के प्रिय कहलाएं ।
तुम्हारे बनाए कुंडल को धारण कर,
दानी कर्ण कुंडल धारक कहलाए ।।

विश्वकर्मा जी है पंच मुखधारी
करते है हंस की सवारी,
तीनों लोक, चौदहों भुवन में,
सब करते उनकी जय जयकारी।।

मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञा पुत्र तुम्हारे,
पधार संग इनके प्रभु आज द्वार हमारे ।
महर्षि प्रभास, देवी वरस्त्री के सुत आप,
आए हरो प्रभु अब, कष्ट सब हमारे।।

अंकुर सिंह

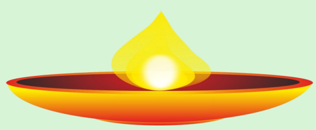

संबंध

माना मैंने संबंध बनाए थोड़े से,
लेकिन उनके पालन की कला निखारी है।
संबंधों को अनुबंध नहीं मैंने माना,
इनके ममत्व की खुशबू मुझको प्यारी है।
बस इसीलिए संबंध निभाने की इच्छा,
मैं अपने मन में प्रतिपल पाले रहता हूं।
तूफानों में नौका बन कर उपलब्ध रहूं,
इस अभिलाषा से लंगर डाले रहता हूं।
हां, संयम की वल्गाएं पकड़े बैठा हूं,
बस इसीलिए कोलाहल से कुछ दूरी है।
मर्यादा का तटबंध टूट न जाए कहीं,
आचरण संहिता का निर्वाह जरूरी है।
ओ संबंधों में समीकरण गढ़ने वालों,
तुम इतना अनहद नाद कभी सुनकर देखो,
सुख में दुःख में, भीतर बाहर जो साथ रहें,
निष्कपट,अयाचक रिश्तों को बुन कर देखो।
फिर तार जुड़ेंगे संबंधों के सांसों से,
अन्तिम यात्रा के आगे साथ निभाएंगे।
जब कभी याद आएगी उन संबंधों की,
आंखों में सहसा अश्रुदीप जल जाएंगे।।

अशोक तिवारी

ग़ज़ल

वो वृद्धाश्रम में छोड़ जाने लगे,
बाप से ही वो नज़रें चुराने लगे।

पकड़ करके उंगली चलाया जिन्हें,
बड़े होके अपनी चलाने लगे।

गिनती सिखाई थी जिनको कभी,
वो अब हमको गलती गिनाने लगे।

मिलने आया करो हमने जब ये कहा,
वो उसी दिन बनाने बहाने लगे।

जिनके बीमार होने पे सोए न हम,
रोग हमको हुआ, वो सताने लगे।

हमको मालूम हुआ ये किसी और से,
सोचते हैं कि बुढ़्ढा ठिकाने लगे।

अब तो खलने लगे हैं विनय उनको हम,
जिनको देने में खुशियाँ जमाने लगे।

विनय बंसल

केशव शरण

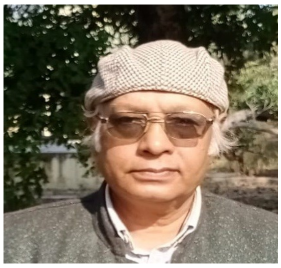

सिला

मनोरथ पूर्ण हुआ
मतलबी का
क्या ख़ूब सिला दिया
रब्तगी का

छवि धूमिल की
कितनों के बीच
कितनों को
मेरे प्रति संदेहग्रस्त किया
और कितने
मेरे दुश्मन बनाये
और इनमें भी उसने
मुझसे ही मदद ली

हीरा

हर बार मैंने
उसकी हथेली पर
एक हीरा रखा
जब मैंने उसके होंठों को चखा

मैंने उसे हीरों का चस्का लगा दिया
उसने मुझे होंठों का

अतः मुझे अपना चस्का पूरा करने के लिए
हर बार
एक हीरा चाहिए
पर बेतरह तलब और तड़प के बावजूद
मैं कहाँ से लाऊँ और हीरा

हीरा अब कभी जब मेरे पास होगा
मैं चखूँगा
उसके होंठों को नहीं
अपने हीरे को
मैंने सोच लिया

"खिलौने"

नन्हे बच्चे को खिलौनों के लिए रोता देख ,
एक मजदूर माँ बोली ,
क्यों चले आते हो,
झोपड़ियों के आगे ,
ए, खिलोने वाले,
हम गरीबो की कहाँ औकात है,
खिलौनों की,
हम भूखे,बेबस है,
आँसुओं को छिपाए फिरते है,
मत मजाक करो ,
ये है हमारी लाचारी,
हमारे खिलौने तो वो है,
जो तकदीर ने लिखे है
बच्चे उन खिलौनों से ही खेलते है,
चाहे होली हो या दिवाली ,
सड़कों पर पड़े पत्थरों को उछालना,
कचरे के ढेर से टूटे टूटे खिलोने तलाशना,
पालिश की डिब्बी ओर ब्रश से खेलना,
बनती बिल्डिंग में टूटी ईंटो से खेलना,
बारिश में कागज की नाव चलाना,
हथोड़े,छेनी के खिलौनों से,
यारी हमारी |

इन्दु सिन्हा "इन्दु"

अवलंबन

लघुकथा:

दादा जी एक कुरसी पर बैठे थे और उनसे थोड़ी दूरी पर उनका छह वर्षीय पौत्र खेलने में व्यस्त था। पौत्र को देखकर बार-बार उनकी आँखें नम हो उठती थीं। दादा जी ने पौत्र को पास बुलाया और उससे पूछा, ''बेटा क्या कर रहे हो?'' पौत्र ने कहा, ''दद्दू खेल रहा हूँ'' और ये कहकर वापस जाने लगा। दादा जी ने उसे रोक लिया और पुनः पूछा, ''बेटा! पापा की याद आती है?'' ''आती है दद्दू '' संक्षिप्त-सा उत्तर देकर पौत्र चुपचाप वहीं दादा जी से सटकर खड़ा हो गया।

अभी कुछ सप्ताह पहले ही तो उसके पिता निरंतर एक वर्ष तक कोविड से संक्रमित रोगियों का उपचार करते हुए स्वयं कोविडग्रस्त होकर एक लंबे संघर्ष के उपरांत अनंत-अज्ञात यात्रा पर प्रस्थान कर गए थे। अपने पौत्र को देखकर फिर से दादा जी की आँखें भर आईं। दादा जी ने पौत्र से एक और प्रश्न किया, ''बेटा जब पापा की याद आती है तब कैसा लगता है?'' दादा जी की आँखों मे झाँकते हुए पौत्र कुछ देर तक तो चुप रहा फिर एकाएक उसने अपना चेहरा दादा जी के सीने से सटा लिया और अपने कोमल-कोमल से हाथों से दादा जी को कसकर पकड़ लिया।

सीताराम गुप्ता

दोहा सप्तक

मॉं शबरी के वंश का, बढ़ा आज सम्मान।
वनवासी में द्रौपदी,बनी अलग पहचान।

प्रथम नारी अब देश की, बनी सबों की शान।
जिनके पद से खुश हुए, जगन्नाथ भगवान।

अपने दम पर पा गई, सबसे बड़ा मुकाम।
मुर्मू ने संघर्ष का, दिया नया पैगाम।

रायसिना के रेस में, पिछड़ गए यशवंत।
जनजातीय समाज को, खुशियॉं मिली अनंत।

राज्य उड़िसा गदगद है, आनंदित हर गॉंव।
जश्न में डूबे लोग हैं, थिरके सबके पॉंव।

प्रथम नागरिक देश की, बनीं द्रौपदी आज।
लोकतंत्र समृद्ध हुआ, खुश,जनजाति समाज।

धरती से अंबर मिला, दीपक से दिनमान।
राष्ट्रपति मुर्मू बनीं, बढ़ी गॉंव की शान।

बिनोद बेगाना

बादल तुम मत चाँद छिपाओ

(साहित्यिक चन्द्रमाओं का प्रकटीकरण)

समर्थ लेखनी के धनी, सुयोग्य शिक्षक, चिन्तक, विद्वान एवं साहित्य-मर्मज्ञ डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी की बहुप्रतीक्षित पुस्तक 'बादल! तुम मत चाँद छिपाओ' का सद्य: प्रकाशन श्वेतांशु प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। पुस्तक का शीर्षक अपने आप में कुतूहलपूर्ण है। शीर्षक (बादल! तुम मत चाँद छिपाओ) से पुस्तक के काव्य-संग्रह होने का आभास होता है किन्तु यह मूलतः उनके निबन्धात्मक-आलोचनात्मक लेखों का संकलन है। शीर्षक की उपयुक्तता के सन्दर्भ में लेखक के पास सटीक तर्क है जिससे सहमत होकर हर पाठक शीर्षक की सार्थकता को समझ सकता है। डॉ. तिवारी ने पुस्तक के आरम्भ में 'अपनी ओर से' शीर्षक में स्पष्ट कर दिया है कि–"वैसे तो 'बादल! तुम मत चाँद छिपाओ' पण्डित सुधाकर पाण्डेय जी की कविता की एक पंक्ति मात्र है लेकिन इसे पुस्तक में जिस सन्दर्भ में ग्रहण किया गया है वह यह है कि इसमें संकलित मध्यकाल के कवि जायसी से लेकर आधुनिक काल के रचनाकार कृष्ण कुमार यादव तक के साहित्य के विभिन्न बिन्दुओं को उजागर किया गया है जिस पर अभी समीक्षा जगत की नजर प्रायः नहीं के बराबर पड़ी है। आशय यह है कि चाँद की तरह अपने सृजन से साहित्य और समाज को सुख देने वाले पुस्तक में संकलित लेखकों की कारयित्री क्षमता को बादल रूपी कुछ समीक्षकों और आलोचकों ने ढँकने का असफल प्रयास किया जो किसी भी दृष्टि से न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।" अपने सार्थक लेखन से साहित्यिक सम्पदा में अभिवृद्धि करने वाले उपेक्षितों के प्रति डॉ. तिवारी जी की यह चिन्ता स्तुत्य है। यह चिन्ता उनकी तीव्र संवेदना से ही उपजी है। संवेदनशीलता लेखनकर्म की प्राथमिक शर्त है। तिवारी जी स्वभावतः अत्यन्त संवेदनशील हैं। यह संवेदनशीलता उनके जीवन के संघर्षों से ही प्राप्त हुई है। पुस्तक में 'डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी : एक परिचय' शीर्षक में डॉ. भुवनेश्वर द्विवेदी जी ने तिवारी जी के दारुण जीवन का कारुणिक वृत्त खींचा है। इतने अभावों, संघर्षों, पीड़ाओं, उपेक्षाओं, अस्थिरताओं के बीच मजबूती से खड़ा रहने वाला व्यक्ति साधारण नहीं हो सकता। साधारण व्यक्ति

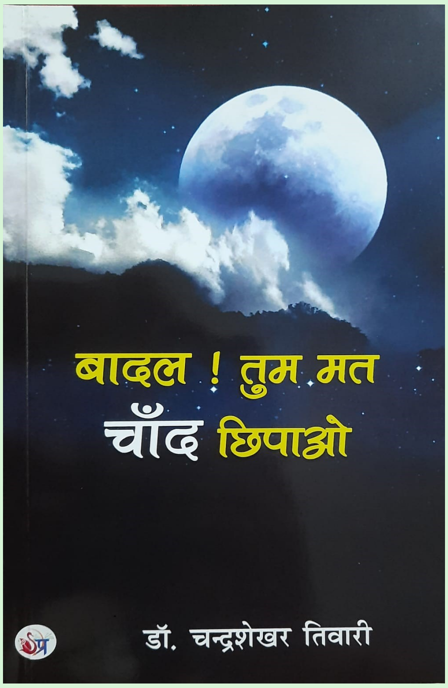

सुरेश कुमार प्रजापति

पूर्णतः टूट जाता है, किन्तु तिवारी जी असाधारण हैं। वे हर परिस्थिति से टकराते हैं, गिरते हैं, सँभलते हैं और साहित्य-सर्जना में लग जाते हैं। विपरीत और विषम परिस्थिति में भी उनके अध्यवसाय में गिरावट नहीं आती। बाधाओं से पार पाने का उनका अदम्य साहस, सब कुछ खोकर भी उनकी जिजीविषा और जीवटता किसी भी हतभागी के लिए प्रेरणाप्रद है। तिवारी जी को 'अभिनव महाप्राण' कहा जाये तो किसी महानुभाव को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। डॉ. तिवारी ने समीक्ष्य पुस्तक में अपने 14 लेखों को संकलित किया है। यह संकलन मध्यकालीन रचनाकार जायसी से लेकर आज के कृष्ण कुमार यादव तक के कलमकारों के व्यक्तित्व-कृतित्व का समुचित रेखांकन-मूल्यांकन करता है। पहला लेख महान सूफी साधक व कवि मलिक मुहम्मद जायसी की महान कृति पद्मावत के 'लक्ष्मी-समुद्र-खण्ड' की पँक्ति 'आवा पवन बिछोहकर, पात परा बेकरार। तरिवर तजा जो चूरि कै, लागै केहि के द्वार।।" को लेकर है। इस दोहे के अर्थ में निरवलम्बता की अनुभूति है, जिसका सामान्य अर्थ है कि एकाएक वियोग की ऐसी हवा चली कि सब कुछ समाप्त हो गया। तेज तूफान के कारण जहाज डूब गया। रत्नसेन वापस अपने देश आ गया। पाट पर पड़ी पद्मावती टूटे पत्ते के समान बेसहाय, बेकरार अपने भाग्य को कोसती है कि मेरे तरिवर (पति) ने जब मुझे छोड़ दिया तब मैं किसके डार जाकर लगूँ। डॉ. तिवारी ने इस प्रचलित अर्थ से आगे निकलकर मौलिक ढंग से नये अर्थ का अन्वेषण किया है। उन्होंने उक्त पँक्तियों में राष्ट्रप्रेम से सन्निहित अर्थ की उद्भावना की है। जिस प्रकार वृक्ष से कटकर पत्ता दुबारा डाली से जुड़ नहीं पाता, लेखक के अनुसार उसी प्रकार–"जो अपनी संस्कृति और संस्कार से कट गया, अपनी जड़ों से कट गया, अपने घर-परिवार, रीति-रिवाज, धर्म-कर्म, विचार-मान्यता, आदर्शों आदि से कट गया, वह कहीं का नहीं रहा।" डॉ. तिवारी जायसी की उक्त पँक्तियों के विषय में कहते हैं–"लगता है इसके माध्यम से कवि युवा पीढ़ी से यही कहना चाहता है कि कभी अपने डार से कटना मत, नहीं तो कहीं के नहीं रहोगे, चूर हो जाओगे और फिर कोई अपने से तुम्हें लगाने वाला नहीं मिलेगा।" इस नये अर्थ की उद्भावना में लेखक पूर्ण विनम्र हैं। वे स्पष्ट कहते हैं कि आवश्यक नहीं कि मेरी बातों से लोग सहमत हों ही।

'प्रसाद काव्य में समन्वयवाद : कामायनी के विशेष सन्दर्भ में' शीर्षक लेख में डॉ. तिवारी ने प्रसाद के समन्वयवादी दृष्टिकोण का सूक्ष्म संधान किया है। भक्तिकाल में सभी भक्त-कवियों ने अपने काव्य में समन्वय- भाव दर्शाया है। गोस्वामी तुलसीदास समन्वय के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। आधुनिक

काल में समन्वय की विराट चेष्टा जयशंकर प्रसाद जी ने की है। उन्होंने दो विरोधी तत्वों के टकराव में मध्यम मार्ग निकाला है। डॉ. तिवारी लिखते हैं–"प्रसाद के काव्य, खासकर 'कामायनी', में यह 'मध्य पथ' (सामंजस्य) जड़ और चेतन में समन्वय, व्यष्टि और समष्टि में समन्वय, बुद्धि और हृदय में समन्वय, परिवर्तन और स्थिरता में समन्वय, प्रवृत्ति और निवृत्ति में समन्वय, शासक और शासित में समन्वय, पुरुष और स्त्री में समन्वय आदि कई रूपों में दिखायी पड़ता है।" तिवारी जी के अनुसार द्वयता और इकाई का सामंजस्य कामायनी का अन्तिम सन्देश है। इसे ज्ञान और कर्म के सामंजस्य द्वारा स्पष्ट किया गया है। वे लिखते हैं - "निरा इच्छा पंगु है। उसे कर्म का सहारा चाहिए और केवल कर्म भी अन्धा है, उसे ज्ञान का आलोक तथा विवेक का अंकुश आवश्यक है। आज के जीवन की विडम्बना का प्रमुख कारण ज्ञान और कर्म में साम्य न होना भी है।" लेखक ने एक अन्य लेख में प्रसाद की औपन्यासिक विशेषता का परीक्षण करते हुए उनके उपन्यासों में सत्य में सौन्दर्य की स्थापना को समुचित रूप में पहचाना है।

डॉ. तिवारी का एक लेख रामवृक्ष बेनीपुरी जी को समर्पित है जिसमें बेनीपुरी जी के व्यक्तित्व का सही लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए उन्हें एक कुशल पत्रकार, सिद्ध और सफल साहित्य सर्जक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, श्रेष्ठ आलोचक एवं समीक्षक, श्रेष्ठ सम्पादक तथा अच्छा इंसान बताया गया है। वर्तमान पीढ़ी किस प्रकार ऐसे महान शब्द-शिल्पियों को भूलती जा रही है, इसकी चिन्ता लेखक को व्यग्र करती है। वे लिखते हैं–"क्या हो गया है हमारी इस नई पीढ़ी को! हम अपने अतीत को, अपनी विरासत को, अपने गौरव को छोड़कर कितने छोटे होते जा रहे हैं! कितने बौने होते जा रहे हैं! इसका ध्यान है किसी को! कहाँ जा रहे हैं हम!"

डॉ. तिवारी ने श्री मुकुर जी को 'आधुनिक हिन्दी साहित्य की नींव की ईंट' कहा है तथा इसी शीर्षक से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। लेख पढ़कर श्री मुकुर जी से जुड़े अनेक नये पहलुओं की जानकारी मिलती है। मसलन दिनकर जी ने कहा कि आज सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में श्री मुकुर से ज्यादा जानकारी रखने वाला वैयाकरण नहीं है। जब दिनकर जैसा व्यक्तित्व ऐसी बात कहे तो समझ लेना चाहिए कि वह बात हल्की नहीं, अपितु बहुत गम्भीर और सोच-समझ कर कही गयी है। वस्तुतः श्री मुकुर बड़े सर्जक हैं किन्तु उपेक्षा से वह भी नहीं बच सके। आश्चर्य तो तब हुआ कि जब मैंने इंटरनेट पर उनका नाम खोजा किन्तु उनके विषय में कुछ खास जानकारी हाथ नहीं लगी। इस दृष्टि से डॉ. तिवारी ने श्री मुकुर जी पर लेख लिखकर महती कार्य किया है।

डॉ. तिवारी के पास कथाकार डॉ. विवेकी राय की ग्रामीण चेतना को देखने-

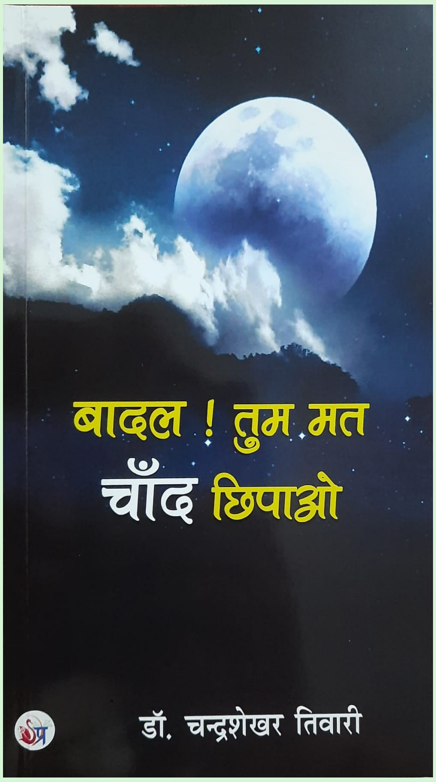

समझने की पारखी दृष्टि है। हो भी क्यों न! डॉ. विवेकी राय पर ही उनका शोधकार्य रहा है और बहुत ही घनिष्ट आत्मीय सम्बन्ध भी रहा है। उनके शब्दों में–"जिस प्रकार सूर वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आये हैं, उसी प्रकार विवेकी राय भी गाँव का कोना-कोना झाँक आये हैं।" ग्रामीण समाज में दीन-दुखियों, गरीब, मजदूर, किसानों के होने वाले शोषण और उनके दु:ख-दर्द पर कलम चलाने वाले विवेकी राय जी को डॉ. तिवारी ने आधुनिक प्रेमचन्द कहा है।

समीक्ष्य पुस्तक में यशस्वी कवि और गीतकार नीरज की काव्य संवेदना और जीवन संघर्ष का परिचय कराने वाले दो लेख संकलित हैं। डॉ. तिवारी ने कविवर नीरज के लेखन को गहनता से पकड़ा है। उनके समग्र कवि-व्यक्तित्व का जो ढाँचा तिवारी जी ने तैयार किया है वह बड़ा ही सटीक जान पड़ता है। वे कहते हैं–"उनकी (नीरज) रचनाओं में मीरा का दर्द, सूर की प्यास, कबीर का फक्कड़पन आदि सब कुछ देखने को मिल जाता है।"

जैसा कि पूर्वोक्त है कि पुस्तक का शीर्षक पं. सुधाकर पाण्डेय की काव्य-पंक्ति पर आधारित है। पुस्तक में उन्हीं पाण्डेय जी पर एक लेख है जिसमें डॉ. तिवारी ने पाण्डेय जी के हिन्दी-प्रेम को उद्घाटित किया है। लेख से ज्ञात होता है कि वाणिज्य के विद्यार्थी होने के बावजूद सुधाकर जी हिन्दी के निःस्वार्थ अनुरागी थे। नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी से जुड़कर उन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दी को समर्पित कर दिया। तिवारी जी की टिप्पणी सटीक है–"एक तरह से कहें तो उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही हिन्दी के उत्थान व विकास में लगा दिया। लगा ही नहीं दिया, बल्कि अपने को खपा भी दिया। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के प्रधानमंत्री के रूप में उनका किया गया कार्य सदैव स्मरणीय रहेगा। दुर्लभ पाण्डुलिपियों की खोज, ग्रन्थावलियों का प्रकाशन, सम्पादन आदि उनके कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य रहे जिनके बल पर हिन्दी साहित्यानुरागियों के बीच वे सदैव समादृत रहेंगे।"

पुस्तक में डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक पर दो लेख संकलित हैं। डॉ. पाठक के जीवन के अनेक प्रसंगों का अनावरण लेख को पढ़कर होता है। उन्होंने अनेक रचनात्मक और विचार साहित्य की सर्जना से हिन्दी साहित्य की सार्थक श्रीवृद्धि की है। उनके कई समीक्षा, शोधपरक ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। मुक्तक परम्परा पर उनके शोधपूर्ण कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। मुक्तक की मौलिक परिभाषा, उसका वर्गीकरण तथा उसकी विकासात्मक परम्परा का गहन अनुशीलन कर डॉ. पाठक जी ने नया प्रतिमान स्थापित किया है। डॉ. तिवारी के अनुसार–"उनकी पुस्तक की ख्याति का मुख्य कारण यह भी था कि समग्र मुक्तक काव्य पर हिन्दी अनुशीलन के समूचे इतिहास में किसी विद्वान ने तब तक कोई कार्य नहीं किया था।"

डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त को याद करते हुए उन पर डॉ.

तिवारी ने संस्मरण लिखा है जो अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। उक्त संस्मरण को पढ़कर कई स्थानों पर भावुक होना पड़ता है। डॉ. गुप्त न केवल प्रख्यात लेखक, साहित्यशोधक और बड़े कवि हैं, बल्कि सच्चे मनुष्य की जीवन्त प्रतिमूर्ति भी हैं। उनकी करुणा, संवेदना, सदाशयता, सद्भाव, दम्भरहित स्वभाव, अपने से छोटों के प्रति आदर-भाव, सहानुभूति आदि अनेक मानवीय गुणों से सम्पन्नता उन्हें एक विराट मानव बनाता है जो कि विराट लेखक या कवि होने से अधिक आवश्यक व महत्त्वपूर्ण है। डॉ. गुप्त जैसे लोग वर्तमान परिवेश में दुर्लभ हैं। हिन्दी की अनेक विधाओं में कलम चलाने वाले और देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में निरन्तर छपने वाले लेखक एवं कवि श्री कृष्ण कुमार यादव की लेखनी कला पर विस्तृत आलेख डॉ. तिवारी ने लिखा है। उनके उत्कृष्ट लेखन शैली की बारीकियों को उदाहरण सहित लेखक ने प्रस्तुत किया है, जिस कारण उनकी (कृष्ण कुमार यादव जी की) सृजनात्मकता का मूल्यांकन यथोचित तथा वस्तुनिष्ठ ढंग से हो पाया है। श्री यादव की लेखन शैली में चुम्बकीय शक्ति है जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर ही लेती है। डॉ. तिवारी के अनुसार कृष्ण कुमार यादव जी की लेखनी की प्रशंसा कई महान व्यक्तियों और साहित्य-मर्मज्ञों ने की है, जिनमें पद्मभूषण श्री गोपाल दास नीरज, डॉ. विवेकी राय, डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. कमलकिशोर गोयनका, बद्रीनारायण तिवारी, गिरिराज किशोर, सेवक वात्स्यायन, प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित, डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव, रामनिवास मानव, प्रो. भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज़', रामस्वरूप त्रिपाठी और डॉ. गोरखनाथ तिवारी का नाम उल्लेखनीय है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि डॉ. चन्द्रशेखर तिवारी की समीक्ष्य कृति अपने शीर्षक की सार्थकता के साथ उन रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रकाश में लाती है जो वास्तव में अपनी रचनात्मकता में चंद्रमा के समान सुन्दर, सुशीतल, आकर्षक और प्रभावशाली हैं किन्तु उपेक्षाओं के बादल में छिपाये जाते रहे। इस दृष्टि से डॉ. तिवारी की यह पुस्तक पठनीय, स्पृहणीय तथा संग्रहणीय है।

ऊप्र साहित्य संस्थान से पुरस्कृत अपनी पत्रिका के कवि शिवानंद सिंह सहयोगी को आत्मीय बधाई

यह शहर

कहाँ रहने योग्य होगा,
आसमानी यह शहर |

खुली खिड़की, धूल के कण,
साँस रोकेंगे,
द्वार हों यदि बंद तो वे,
धाँस रोकेंगे,
लूट का अवदान होगा,
राजधानी यह शहर |

लड़कियों के चेहरों पर,
अम्ल बरसेगा,
दोपहर में हर सड़क पर,
बल्ब चमकेगा,
शोर, नारों की करेगा,
बागबानी यह शहर |

राजनीतिक शक्तियों का,
पेट निकलेगा,
मोम के इन टेसुओं का,
मोम पिघलेगा,
कशिश की होगा किसी दिन,
रातरानी यह शहर |

पश्चिमी उद्विग्नता का,
बोल-बाला है,
आलसीपन से भरा, हर
दिवस काला है,
स्वयं नि:संदेह बरते,
सावधानी यह शहर |

मैं गीत हूँ

विकल आँसू की तरह
बहती नदी
मैं गीत हूँ |

भावनाओं की सुवासित
मोम की मरियम,
साधना की अभिक्रियाओं
का नया अधिगम,
अंतरों की लघुकथा
अगली सदी
मैं गीत हूँ |

छंद का ऋजुकोण, लय की
नर्मदा अविरल,
सर्जना का गम्य गुंबद,
सर्वदा अविचल,
वास्तविकता का उदय
युग-त्रासदी
मैं गीत हूँ |

राम की अतुलित अयोध्या
और वन के दिन,
सूर्य की उगती किरण के
उन्नयन अनगिन,
धर्म की सीता, समय की
द्रौपदी
मैं गीत हूँ |

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन और शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर विशेष

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है-'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय परम्परा में शिक्षा को शरीर, मन और आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का साधन माना गया है। शिक्षा मानव को उस सोपान पर ले जाती है जहाँ वह अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का आरंभ से ही उच्च स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही आचार्य देवो भवः का बोध-वाक्य प्रचलित है।भारत में गुरु-शिष्य की लम्बी परंपरा रही है। बहुत सारे कवियों,

गद्यकारों ने कितने ही पन्ने गुरु की महिमा में रंग डाले हैं।

गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय

बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।

कबीरदास द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्त्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत तमाम ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते, लेकिन जिस समाज में रहना है, उसके योग्य हमें शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का

महत्त्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वह न सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए

प्रेरित करते हैं, बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है, जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। कई ऋषि-मुनियों ने अपने गुरुओं से तपस्या की शिक्षा को पाकर जीवन को सार्थक बनाया।

प्राचीनकाल में राजकुमार भी गुरूकुल में ही जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे और विद्यार्जन के साथ-साथ गुरु की सेवा भी करते थे। राम-विश्वामित्र, कृष्ण-संदीपनी, अर्जुन-द्रोणाचार्य से लेकर चंद्रगुप्त मौर्य-चाणक्य एवं विवेकानंद-रामकृष्ण परमहंस तक शिष्य-गुरू की एक आदर्श एवं दीर्घ परम्परा रही है। उस एकलव्य को भला कौन भूल सकता है, जिसने द्रोणाचार्य की मूर्ति स्थापित कर धनुर्विद्या सीखी और गुरुदक्षिणा के रूप में द्रोणाचार्य ने उससे उसके हाथ का अंगूठा ही माँग लिया था। श्री राम और लक्ष्मण ने महर्षि विश्वामित्र,

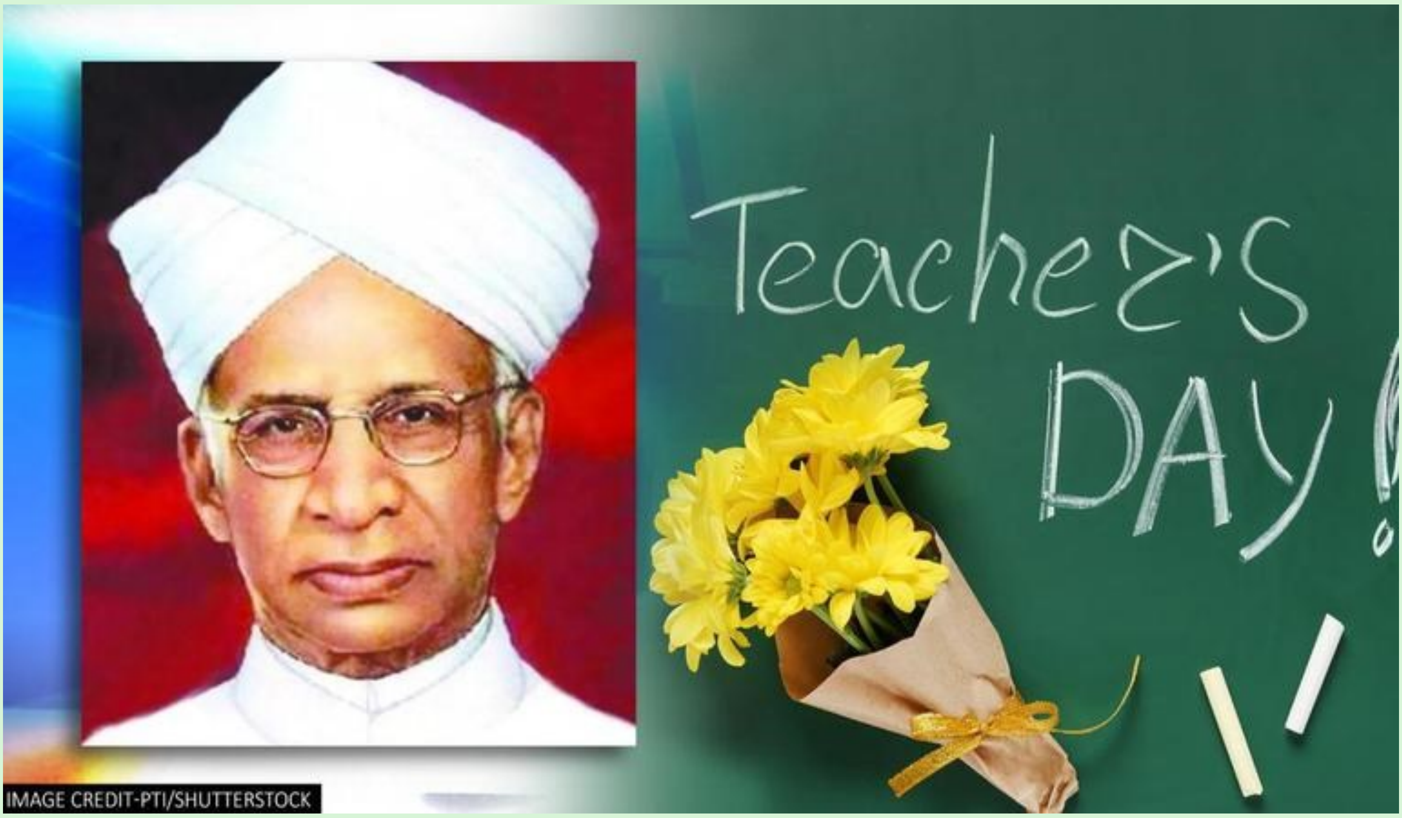

तो श्री कृष्ण ने गुरु संदीपनी के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण की और उसी की बदौलत समाज को आताताययियों से मुक्त भी किया। गुरुवर द्रोणाचार्य ने पांडव-पुत्रों विशेषकर अर्जुन को जो शिक्षा दी, उसी की बदौलत महाभारत में पांडव विजयी हुए। द्रोणाचार्य स्वयं कौरवों की तरफ से लड़े पर कौरवों को विजय नहीं दिला सके क्योंकि उन्होंने जो शिक्षा पांडवों को दी थी, वह उन पर भारी साबित हुई। गुरु के आश्रम से आरम्भ हुई कृष्ण-सुदामा की मित्रता उन मूल्यों की ही देन थी, जिसने उन्हें अमीरी-गरीबी की खाई मिटाकर एक ऐसे धरातल पर खड़ा किया जिसकी नजीर आज भी दी जाती है। विश्व-विजेता सिकंदर के गुरु अरस्तू को भला कौन भुला सकता है।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने तो अपने पुत्र की शिक्षिका को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उसकी शिक्षा में उनका पद आड़े नहीं आना चाहिए। उन्होंने शिक्षिका से अपने पुत्र को सभी शिक्षाएं देने का अनुरोध किया जो उसे एक अच्छा व्यक्ति बनाने में सहायता करती हों।

वस्तुतः शिक्षक उस प्रकाश-स्तम्भ की भांति है, जो न सिर्फ लोगों को शिक्षा देता है बल्कि समाज में चरित्र और मूल्यों की भी स्थापना करता है। शिक्षा का रूप चाहे जो भी हो पर उसके सम्यक अनुपालन के लिए शिक्षक का होना निहायत जरूरी है। शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं बल्कि चरित्र विकास, अनुशासन, संयम और तमाम सद्गुणों के साथ अपने को अप-टू-डेट रखने का माध्यम भी है। शिक्षा मानव जीवन को परिष्कृत करने का सशक्त माध्यम है। कहते हैं बच्चे की प्रथम शिक्षक माँ होती है, पर औपचारिक शिक्षा उसे शिक्षक के माध्यम से ही मिलती है। प्रदत शिक्षा का स्तर ही व्यक्ति को समाज में तदनुरूप स्थान और सम्मान दिलाता है। शिक्षा सिर्फ अक्षर-ज्ञान या डिग्रियों का पर्याय नहीं हो सकती बल्कि एक अच्छा शिक्षक अपने विद्यार्थियों का दिलो-दिमाग भी चुस्त-दुरुस्त बनाकर उसे वृहद आयाम देता है। शिक्षक का उद्देश्य पूरे समाज को शिक्षित करना है। शिक्षा एकांगी नहीं होती बल्कि व्यापक आयामों को समेटे होती है।

आजादी के बाद इस गुरु-शिष्य की दीर्घ परम्परा में तमाम परिवर्तन आये। 1962 में जब डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के राष्ट्रपति के रूप में पदासीन हुए तो उनके चाहने वालों ने उनके जन्मदिन को ''शिक्षक दिवस'' के रूप में मनाने की इच्छा जाहिर की। डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा कि- ''मेरे न्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने के निश्चय से मैं अपने को काफी गौरवान्वित महसूस करूँगा।'' तब से लेकर हर 5 सितम्बर को ''शिक्षक दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षकीय आदर्श को न सिर्फ भारत में अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। उन्होंने न सिर्फ शिक्षकीय पद की गरिमा बढ़ायी, बल्कि उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति के रूप में भी भारत को अपना नेतृत्व प्रदान किया। अपने ज्ञान को दूसरों में बाँटने की अद्भुत प्रतिभा उनमें निहित थी तथा इसी उत्कृष्ट कला के कारण वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में विख्यात हुए। डॉ. राधाकृष्णन एक महान शिक्षाविद थे। वे वर्ष 1916 में मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शन शास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। उन्होंने शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् विश्व के महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों में व्याख्यान दिया। वे दर्शनशास्त्र के प्रख्यात विद्वान थे। उन्होंने अपने लेखों और भाषणों के द्वारा विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित कराया।

पश्चिम देशों में एक आदर्श दार्शनिक के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त थी। वे 1931 से 1936 तक वाल्टेयर विश्वविद्यालय आंध्रप्रदेश के वाइस चांसलर रहे। 1936 से 1952 तक वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

रहे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय अंतर्गत आने वाले जार्ज पंचम कॉलेज में भी सेवाएं दीं। डॉ. राधाकृष्णन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहे। वर्ष 1940 में वे प्रथम भारतीय के रूप में ब्रिटिश अकादमी में चुने गए तथा 1948 में उन्होंने यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। उन्हें भारत में संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण गैर राजनीतिज्ञ होते हुए देश की स्वतंत्रता के पश्चात् 1952 में वे भारत के पहले उपराष्ट्रपति बनाए गए। 1957

में वे दूसरी बार उप राष्ट्रपति चुने गए। उन्होंने अपने जीवनकाल में 150 से अधिक रचनाएं की। वे देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित हुए। निश्चिततः डॉ. राधाकृष्णन बहुआयामी प्रतिभा के धनी, सादगीपूर्ण जीवन शैली निर्वहनकर्ता तथा देश की संस्कृति का सम्मान करने वाले व्यक्ति थे। एक उत्कृष्ट शिक्षक, दार्शनिक, देशभक्त और निष्पक्ष एवं कुशल राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने राष्ट्र को अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दीं। वे उच्च पदों पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा को एक मिशन माना था और उनके मत में शिक्षक

होने का हकदार वही है, जो लोगों से अधिक बुद्धिमान व विनम्र हो। अच्छे अध्यापन के साथ-साथ शिक्षक का अपने छात्रों से व्यवहार व स्नेह उसे योग्य शिक्षक बनाता है। मात्र शिक्षक होने से कोई योग्य नहीं हो जाता बल्कि यह गुण उसे अर्जित करना होता है। वे शिक्षा को सामाजिक बुराइयों के अंत करने का एक महत्वपूर्ण जरिया मानते थे। डॉ. राधाकृष्णन का मानना था कि व्यक्ति निर्माण एवं चरित्र निर्माण में शिक्षा का विशेष योगदान है। वैश्विक शान्ति, वैश्विक समृद्धि एवं वैश्विक सौहार्द में शिक्षा का महत्व अतिविशेष है। उनका मानना था कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। उनके यह शब्द समाज में शिक्षकों की सही भूमिका को दिखाते हैं- ''शिक्षक का काम सिर्फ किताबी ज्ञान देना ही नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों से छात्र को परिचित कराना भी होता है।'' शिक्षा के व्यवसायीकरण के विरोधी डॉ0 राधाकृष्णन विद्यालयों को ज्ञान के शोध केंद्र, संस्कृति के तीर्थ एवं स्वतंत्रता के संवाहक मानते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि राष्ट्रपति बनने के बाद भी वे वेतन के मात्र चौथाई हिस्से से जीवनयापन कर समाज को राह दिखाते रहे।

वास्तव में देखा जाये तो शिक्षक उस माली के समान है, जो एक बगीचे को भिन्न-भिन्न रूप -रंग के फूलों से सजाता है। जो छात्रों को काँटों पर भी मुस्कुराकर चलने को प्रोत्साहित करता है। उन्हें जीने की वजह समझाता है। शिक्षक के लिए सभी छात्र समान होते हैं और वह सभी का कल्याण चाहता है। शिक्षक ही वह धुरी होता है, जो विद्यार्थी को सही-गलत व अच्छे-बुरे की पहचान करवाते हुए बच्चों की अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। बच्चे तो कच्चे घड़े की भांति होते हैं, ऐसे में उन्हें जिस रूप में ढालो, वे ढल जाते हैं। वे स्कूल में जो सीखते हैं या जैसा उन्हें सिखाया जाता है, वे परिवार और समाज में वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है, जैसा वह अपने आस-पास होता देखते हैं।

ऐसे में शिक्षक प्रेरणा की फुहारों से बालक रूपी मन को सींचकर उनकी नींव को मजबूत करता है तथा उसके सर्वांगीण विकास के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है। किताबी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों व संस्कार रूपी

शिक्षा के माध्यम से एक आदर्श शिक्षक ही शिष्य में अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। तभी तो कहा गया है कि-

गुरुब्रह्म गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरूः साक्षात परब्रह्म, तस्मैं श्री गुरूवे नमः।।

आकांक्षा यादव

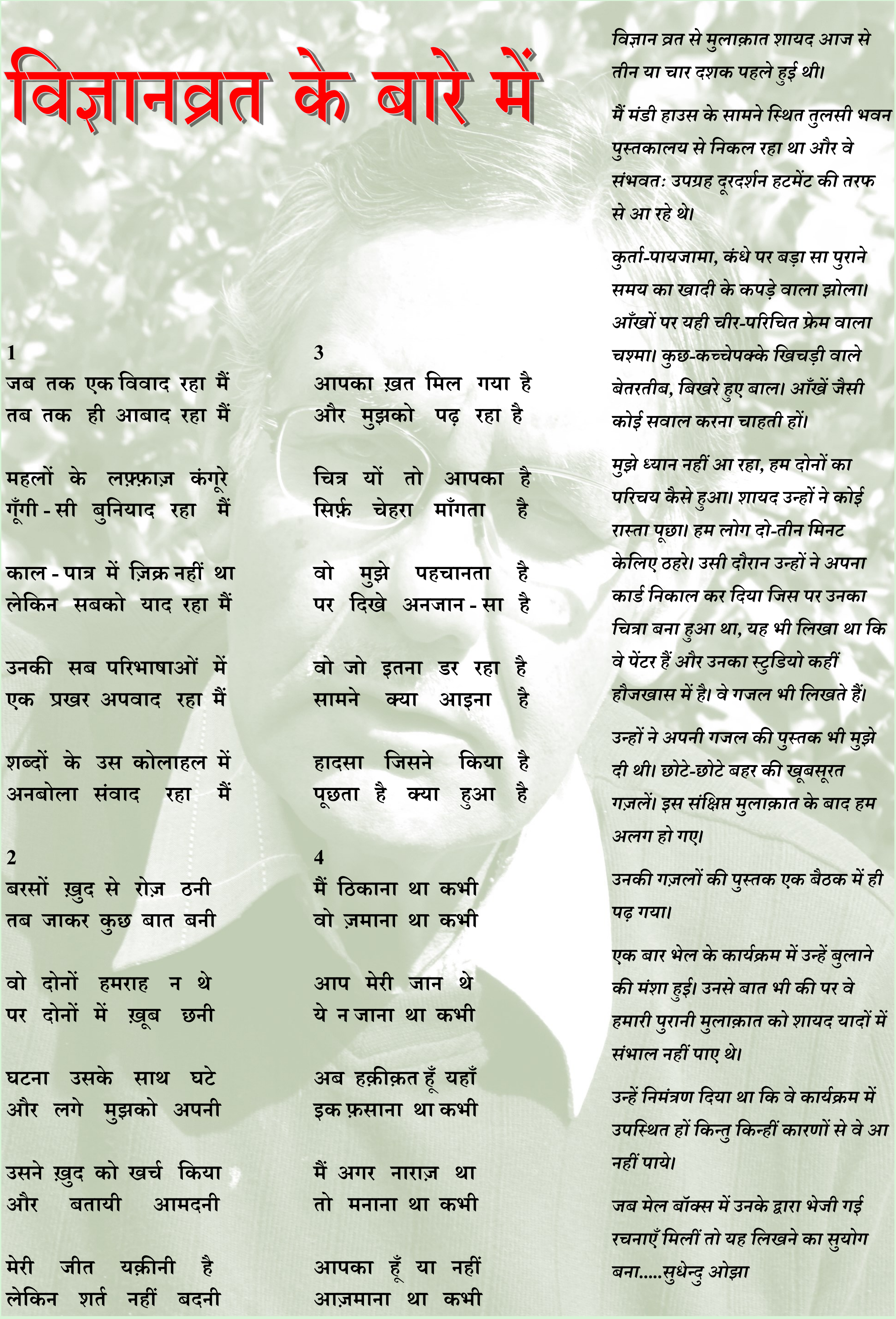

विज़ानव्रत के बारे में

1

जब तक एक विवाद रहा मैं
तब तक ही आबाद रहा मैं

महलों के लफ़्फ़ाज़ कंगूरे
गूँगी - सी बुनियाद रहा मैं

काल - पात्र में ज़िक्र नहीं था
लेकिन सबको याद रहा मैं

उनकी सब परिभाषाओं में
एक प्रखर अपवाद रहा मैं

शब्दों के उस कोलाहल में
अनबोला संवाद रहा मैं

2

बरसों ख़ुद से रोज़ ठनी
तब जाकर कुछ बात बनी

वो दोनों हमराह न थे
पर दोनों में ख़ूब छनी

घटना उसके साथ घटे
और लगे मुझको अपनी

उसने ख़ुद को खर्च किया
और बतायी आमदनी

मेरी जीत यक़ीनी है
लेकिन शर्त नहीं बदनी

3

आपका ख़त मिल गया है
और मुझको पढ़ रहा है

चित्र यों तो आपका है
सिर्फ़ चेहरा माँगता है

वो मुझे पहचानता है
पर दिखे अनजान - सा है

वो जो इतना डर रहा है
सामने क्या आइना है

हादसा जिसने किया है
पूछता है क्या हुआ है

4

मैं ठिकाना था कभी
वो ज़माना था कभी

आप मेरी जान थे
ये न जाना था कभी

अब हक़ीक़त हूँ यहाँ
इक फ़साना था कभी

मैं अगर नाराज़ था
तो मनाना था कभी

आपका हूँ या नहीं
आज़माना था कभी

विज़ान व्रत से मुलाक़ात शायद आज से तीन या चार दशक पहले हुई थी।

मैं मंडी हाउस के सामने स्थित तुलसी भवन पुस्तकालय से निकल रहा था और वे संभवतः उपग्रह दूरदर्शन हटमेंट की तरफ से आ रहे थे।

कुर्ता-पायजामा, कंधे पर बड़ा सा पुराने समय का खादी के कपड़े वाला झोला। आँखों पर यही चीर-परिचित फ्रेम वाला चश्मा। कुछ-कच्चेपक्के खिचड़ी वाले बेतरतीब, बिखरे हुए बाल। आँखें जैसी कोई सवाल करना चाहती हों।

मुझे ध्यान नहीं आ रहा, हम दोनों का परिचय कैसे हुआ। शायद उन्हों ने कोई रास्ता पूछा। हम लोग दो-तीन मिनट केलिए ठहरे। उसी दौरान उन्हों ने अपना कार्ड निकाल कर दिया जिस पर उनका चित्रा बना हुआ था, यह भी लिखा था कि वे पेंटर हैं और उनका स्टुडियो कहीं हौजखास में है। वे गजल भी लिखते हैं।

उन्हों ने अपनी गजल की पुस्तक भी मुझे दी थी। छोटे-छोटे बहर की ख़ूबसूरत गज़लें। इस संक्षिप्त मुलाक़ात के बाद हम अलग हो गए।

उनकी गज़लों की पुस्तक एक बैठक में ही पढ़ गया।

एक बार भेल के कार्यक्रम में उन्हें बुलाने की मंशा हुई। उनसे बात भी की पर वे हमारी पुरानी मुलाक़ात को शायद यादों में संभाल नहीं पाए थे।

उन्हें निमंत्रण दिया था कि वे कार्यक्रम में उपस्थित हों किन्तु किन्हीं कारणों से वे आ नहीं पाये।

जब मेल बॉक्स में उनके द्वारा भेजी गई रचनाएँ मिलीं तो यह लिखने का सुयोग बना.....सुधेन्दु ओझा

खुद को चाहने की हद से गुजर जाने की कोशिश!

सोनम लववंशी

खुद के लिए जीने के बहुत से मतलब हैं! अपनी रुचियों का ध्यान रखना, अपने लिए समय निकालना, घर और पति की जरूरतों की पूर्ति करने के साथ उनकी पसंद-नापसंद का ध्यान रखना। लेकिन, इसके साथ में अपनी पसंद को भी दबने नहीं देना। लेकिन, इसका कहीं यह मतलब नहीं कि खुद से शादी कर लेना। यह बड़ोदरा की क्षमा बिंदू करने वाली हैं। सीधे से शब्दों में इसे 'सेल्फ मैरिज' कहा जा सकता है। स्त्री और पुरुष की शादी सामान्य बात है, सामाजिक अवधारणा भी यही है। कुछ असामान्य शादियां पुरुष से पुरुष और महिला से महिला की भी सुनी गई! लेकिन, क्षमा बिंदू जो करने वाली हैं, वो अपने आप में अनोखी घटना है। उन्होंने अपने आप से ही शादी का एलान करके एक नई बहस को छेड़ दिया। सवाल ये भी उठता है कि 'सेल्फ मैरिज' की जरूरत ही क्यों! वे अपने आपसे प्यार करके बिना शादी का प्रपंच करके भी तो रह सकती थीं! ऐसा नहीं लगता कि ये महज प्रोपेगेंडा है! आश्चर्य है कि इसे लेकर कहीं से कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई!

किताबी भाषा में इस तरह की शादी को 'सोलोगैमी' नाम दिया गया है। जिन चंद महिलाओं ने सोलोगैमी' को अपनाया, उनका कहना है, कि यह खुद का मूल्य समझने और खुद से प्यार करने की तरफ उठाया गया एक बड़ा कदम है। दुनिया के देशों में यह महिलाओं में ज्यादा प्रचलित है। महिलाएं इसे अपनाने की तरफ ज्यादा बढ़ रही है। 24 साल की क्षमा बिंदू खुद से शादी करके एक नई परंपरा को जन्म देने की कोशिश कर रही हैं। इसलिए कि क्षमा का कहना है कि वे किसी लड़के से शादी करना नहीं चाहती! लेकिन, उन्हें दुल्हन तो बनना था। क्षमा के लिए यह सेल्फ एक्सेप्टेन्स यानी खुद को अपनाने का एक तरीका है। इसी कारण उन्होंने यह कदम उठाने का फैसला किया।

महिलाएं आखिर 'सोलोगैमी' की तरफ क्यों आकर्षित हो रही हैं, वैसे तो इसके कई कारण हो सकते हैं! पर इसे एक तरह से पुरुषों के प्रति फ्रस्टेशन भी तो माना जा सकता है! कई महिलाएं 'सोलोगैमी' इसलिए अपना रही हैं, क्योंकि वे अकेले में खुद के साथ जितनी खुशी महसूस करती हैं, उतनी वे अपने लाइफ पार्टनर के साथ कभी नहीं कर पाएंगी! दरअसल, ये एक तरह की सोच है, पर ये हर किसी के लिए संभव नहीं! 'सोलोगैमी' का अर्थ है, कि वह किसी व्यक्ति से नहीं, बल्कि जीवन से और खुद से ज्यादा जुड़ाव महसूस करती हैं।

कई लड़कियां ऐसी भी हैं, जो लड़के से शादी की इच्छा नहीं रखतीं, वे भी 'सोलोगैमी' अपना रही हैं। लेकिन, जरूरी नहीं कि वे क्षमा बिंदू की तरह शादी का प्रपंच रचे! सही जीवनसाथी की तलाश का जब कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकल रहा हो, तो ऐसी लड़कियां 'सेल्फ मैरिज' करके चैन की सांस ले सकती हैं। इसे सदियों से चल रही सामाजिक परम्पराओं को खंडित करने की कोशिश भी कहा जा सकता है। पर, इसे सही दिशा में उठाया गया कदम भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि, ये सर्व स्वीकार्य परंपरा नहीं है।

बड़ोदरा की क्षमा बिंदू खुद से शादी करके हनीमून पर भी जाएगी! देश में क्षमा बिंदू पहली लड़की है, जो ऐसा कुछ कर रही है। यह देश में होने वाली पहली सोलोगैमी मैरिज है। दुल्हन क्षमा का कहना है, कि मैं कभी भी शादी करना नहीं चाहती थी। लेकिन, दुल्हन बनने का सपना मैंने हमेशा से देखा है। ऐसे में मैंने खुद से ही शादी करने का फैसला किया। जैसे हर कोई किसी न किसी से प्यार करता है, वैसे ही मैं खुद से प्यार करती हूं। इसलिए मैंने इस शादी का फैसला किया। क्षमा ने शादी के बाद हनीमून की भी प्लानिंग कर रखी है। वो हनीमून के लिए गोवा जाएंगी। उनके इस फैसले से परिवार को कोई आपत्ति नहीं है। उनके माता-पिता बहुत खुले विचारों वाले हैं और उन्होंने क्षमा को ये करने की इजाजत भी दी।

खुद के साथ शादी करना ही सेल्फ मैरिज या सोलोगैमी कहलाता है। इसकी शुरुआत करीब दो दशक पहले हुई थी। लेकिन, ये चर्चा में तब आया, जब फेमस प्रोटागोनिस्ट कैरी ब्रैडशॉ ने खुद से शादी करने का ऐलान किया था। ये कुछ अनोखा था, इसलिए बाद में कई लोगों ने इस शादी को स्वीकार किया। फिर जब कोरोना काल में लोग घरों में कैद रहने को मजबूर हुए, तब फुरसत की सोच ने इस मैरिज को तवज्जो मिली। कई मशहूर सितारे भी अपने पार्टनर से शादी करने से पहले खुद से शादी कर चुके है। लेकिन, कानूनी तौर पर देखा जाए, तो इस तरह की शादी को कोई मान्यता नहीं दी जाती। खास कर भारतीय परम्परा में शादी एक पवित्र बंधन है। जिसे दो आत्माओं का मिलन कहा जाता है। लेकिन सोलोगैमी मैरिज विवाह पद्धति को ही सवालों के घेरे में खड़ा कर रहा है। इस शादी का भविष्य क्या होगा यह तो आने वाला समय ही बताएगा। लेकिन खुद से प्यार जताने के लिए शादी जैसी परपंरा के साथ

लघुकथा

चल भाग यहाँ से

दिलीप कुमार

"चल, भाग यहां से " जैसे ही उसने सुना ,वो अपनी जगह से थोड़ी दूर खिसक गयी।वहीं से उसने इस बात पर गौर किया कि भंडारा खत्म हो चुका था। बचा -खुचा सामान भंडार गृह में रखा जा चुका था । जूठा और छोड़ा हुआ भोजन कुत्तों को और गायों को दिया जा चुका था यानी उसे भोजन मिलने की आखिरी उम्मीद भी खत्म हो चुकी थी।

उसने कुछ सोचा ,अपना जी कड़ा किया और भंडार गृह के दरवाजे पर पहुंच गई।

उसे देखते ही अंदर से एक भारी -भरकम आवाज फटकारते हुए बोली –"तू यहाँ तक कैसे आ गयी । चल, भाग यहाँ से "।

वो कातर स्वर में बोली –

"अब ना भगाओ मालिक, अब तो सभी लोग खा चुके। कुत्ते और गायों को भी खाना डाल दिया गया है । अब कोई नहीं बचा "।

भारी भरकम आवाज ,लंबी -चौड़ी ,कद -काठी के साथ बाहर आ गयी और उस जगह का बड़ी बारीकी से मुआयना किया। उन्होंने इस बात की तस्दीक कर ली कि वहां पर कुत्तों,गायों और उनके विश्वासपात्र इकलौते ,बलशाली लठैत के अलावा कोई नहीं था।

बुलंद आवाज ने जनाना को भंडार गृह के अंदर बुला लिया।

तरह -तरह के पकवानों की रंगत और उसकी खुश्बू देखकर वो अपनी सुध -बुध खो बैठी, क्योंकि हफ्तों हो गए थे उसे दो वक्त का खाना खाए हुए।

मालिक ने एक पत्तल में सारे पकवान भर कर जब उसकी तरफ बढ़ाया तो पत्तल की तरफ झपट पड़ी क्योंकि भूख से उसकी अतड़ियां ऐंठी जा रही थीं।

उसके हाथ पत्तल तक पहुंचते इससे पहले मालिक ने उसका हाथ पकड़ लिया और धीरे से कहा –

"तेरा पेट तो भर जायेगा, लेकिन मेरा पेट कैसे भरेगा "?

वो रुआंसे स्वर में बोली –

"पहले तुम ही खा लो मालिक । मैं उसके बाद बचा -खुचा या जूठा खा लूंगी "।

"मेरा पेट इस खाने से नहीं भरेगा " ये कहते हुए मालिक ने उसे अपने अंक में भींच लिया।

पहले वो सहमी, अचकचाई कि मालिक क्या चाहता है लेकिन फिर वो समझ ही गयी मालिक की चाहत,क्योंकि यही तो उससे तमाम मर्द चाहते हैं।

मालिक का प्रस्ताव सुनने के बाद उसने कहा –

"इसके बाद तो खाना मिल जायेगा मालिक "।

"हां, खाना खाने को भी मिलेगा और ले जाने को भी ,तो तैयार है ना तू "मालिक ने कुटिल मुस्कान से पूछा।

उसने सर झुका लिया।

मालिक ने भंडार गृह से बाहर निकलकर अपने लठैत से कहा –

"मैं अंदर खाना खा रहा हूँ। इधर किसी को आने मत देना। जब मैं खाकर बाहर आ जाऊं तब तू भी आकर खा लेना। समझ गया ना पूरी बात "।

लठैत ये सुनकर निहाल हो गया उसने सहमति में सिर हिलाया।

मालिक ने अपनी भूख मिटानी शुरू कर दी , उधर वो बेबस जनाना सोच रही थी कि मालिक की ख़ुराक पूरी होते ही उसे इतना खाना मिल जायेगा कि और उसकी बूढ़ी -अंधी माँ आज भरपेट भोजन कर सकेंगी और आज उसे किसी चौखट पर ये दुत्कार सुनने को नहीं मिलेगी कि "चल ,भाग यहाँ से "।

आरंभ देश भक्ति काव्य गोष्ठी

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के दिन "आरंभ चैरिटेबल फाउंडेशन" द्वारा "आरंभ देश भक्ति काव्य गोष्ठी" का आयोजन किया गया जिसमें प्रबुद्ध रचनाकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा के संस्थापक अध्यक्ष सरन घई थे। अध्यक्षता अनुपमा अनुश्री ने की।

सभी रचनाकारों ने देशभक्ति पूर्ण रचनाओं से माहौल को भावपूर्ण कर दिया।

गुरुग्राम, हरियाणा से अंजनी शर्मा ने अपनी रचना" पहरेदार" सुनाई -

वतन के रिपुओं पर रखता पल -पल नज़र है वो।
झुलसती ख्वाहिशों के ज्वालामुखी -सा।।

वहीं लखनऊ से साधना मिश्रा ने अपनी पंक्तियों से आवाहन किया और एक पैगाम देश के नाम दिया-

सुनो,सुनो ऐ देशवासियों, पैगाम सुनाने आई हूँ ,
भूल गए जो जिम्मेदारी, मैं उसे बताने आयी हूँ।
हम भव्य समृद्ध देश के बालक, यह विश्वास दिलाने आई हूँ।

भारत की अतुल्य गौरवमयी संस्कृति- सभ्यता, त्याग, बलिदान, प्रेम, ज्ञान को अपनी कविता" भारत" में "अनुपमा अनुश्री" ने इस तरह समेटा

भारत मानचित्र पर
मात्र भूखंड नहीं!
ज्ञान ,अध्यात्म ,प्रेम से
विश्व को ज्योतिर्मय करता
अखंड सितारा है।
नख- शिख सौभाग्य
से श्रृंगारित
आदि से अनंत,
दिग- दिगंत तक जीवंत
भारत हमारा है।।

शोभा ठाकुर, भोपाल ने अपनी रचना क्रांतिकारी वीरांगनाओं को समर्पित की-

स्वर्णिम आजादी का अमृत महोत्सव
वीरता की प्रतीक जाबांज नारीरत्नों
तुमको समर्पित स्वतंत्रता के तीन रंग का हार है
अभिनंदन है , वदंन है देश का शत शत नमन है।

वहीं डॉ .आर के तिवारी मतंग , अयोध्या ने अपनी कविता में देशद्रोहियों को ललकारा-

केवल कुछ मक्कारों पर
हैरान तिरंगा है
अपने घर के गद्दारों से
हैरान तिरंगा है
हर एक भारतवासी का ये
भगवान तिरंगा है
हमारी शान तिरंगा है।

कार्यक्रम में उषा चतुर्वेदी , शोभा भिसे , नीलिमा दुबे ,बेंगलुरु ने भी अपनी देशभक्ति से ओतप्रोत रचनाओं से सभी को अभिभूत कर दिया।

व्यग्र पाण्डे

एक छतरी

मैं वर्षा से तुम्हें बचाती
धूप के भी आड़े आ जाती
पकड़े रहना तुम मुझको
नहीं तो मैं उड़ भी जाती
तरह तरह के रंग मेरे
होता कोई संग मेरे
जब मैं सिकुड़ जाती हूँ
बेंत भी बन जाती हूँ
एक छतरी जब होते दो
खेला करती खो खो खो
बच्चों की मैं प्यारी हूँ
बड़ों की भी दुलराती हूँ
बटन दबायें खुल जाती मैं
सिर ऊपर लहराती हूँ

हिन्दी दिवस (14 सितंबर) पर विशेष

विश्व पटल पर हिन्दी के बढ़ते कदम

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का सीधा सम्बन्ध उसकी भाषा से होता है। भाषा ही वह तत्व है जो एक राष्ट्र को अन्य से अलग करते हुए उसे एक विशिष्ट पहचान देती है। तभी तो कहा गया कि निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषन को मूल। भारत प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक गतिविधियों और परम्पराओं में विश्व का अग्रणी राष्ट्र रहा है। प्राचीन भारतीय चिन्तकों, ऋषि-मुनियों, विचारकों व विद्वानों ने देश में सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक-धार्मिक-आध्यात्मिक इत्यादि क्षेत्रों में ऐसी गतिविधियों की नींव रखी, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होकर अक्षुण्ण परम्पराओं के कालक्रम में सदैव जीवंत रहीं। यही कारण था कि समय-समय पर तमाम आक्रमणकारियां ने भारतीय संस्कृति पर हमला करना चाहा, पर अपनी निरंतरता और जीवंतता के चलते भारतीय संस्कृति ने उन सभी को आत्मसात् कर लिया। विश्वप्रसिद्ध तमाम विद्वानां और मनीषियों ने भारतीय संस्कृति की गहराई को परखने के लिए यहाँ आकर अध्ययन किया और इसकी महिमा अपने देशों तक फैलायी। इकबाल ने यूँ ही नहीं कहा कि- ‘‘सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।‘‘

भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, उन्नत प्रौद्योगिकी एवं सूचना-तकनीक के बढ़ते इस युग में सबसे बड़ा खतरा भाषा, साहित्य और संस्कृति के लिए पैदा हुआ है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज पथभ्रमित हुआ है या अपसंस्कृति हावी हुयी है तो साहित्य ने ही उसे संभाला है। कहा भी गया है कि-‘साहित्य समाज का दर्पण है।’ साहित्य का सम्बन्ध सदैव संस्कृति से रहा है और हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। संस्कृत वांग्डमय का पूरा सांस्कृतिक वैभव हिन्दी के माध्यम से ही आम जन तक पहुँचा है। हिन्दी का विस्तार क्षेत्र काफी व्यापक रहा है, यहाँ तक कि उसमें संस्कृत साहित्य की परंपरा और लोक भाषाओं की वाचिक परम्परा की संस्कृति भी समाविष्ट रही है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिन्दी और उसकी लोकभाषाओं ने घर-घर स्वाधीनता की जो लौ जलायी वह मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं थी, वरन सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी थी। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिन्दी एक दूसरे के दर्पण रहे हैं ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफी-संतों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर ख़ुसरो ने इसे ‘हिंदवी’ गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे ‘जबाने हिन्दी’ बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों-ब-दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में लगभग **5000** भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग **1652** भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें **63** भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन **1652** भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में **18** भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के **91** प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक **46** प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी।

भारत में हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी को वरीयता देने का एक फैशन सा चल पड़ा है। पर तमाम शोधों ने सिद्ध कर दिया है कि स्वंय ब्रिटेन तक में हिन्दी की शुरूआत प्रिंटिंग प्रेस क्रान्ति के साथ ही सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में ही हो गयी जबकि उस समय भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़नी अभी आरम्भ ही हुई थी। सन् **1560** में ब्रिटेन में देवनागरी में छपाई का कार्य आरम्भ हो चुका था जबकि तब तक वह भारत में हाथ से ही लिखी जा रही थी।

कालान्तर में जे. विल्किंसन व जार्ज फॉस्टर ने क्रमशः श्रीमद्भागवत गीता व अभिज्ञान शाकुन्तलम से प्रभावित होकर हिन्दी सीखी और उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। सन् **1800** के दौरान स्कॉटलैण्ड के जॉन बोथनिक गिलक्रास्ट ने देवनागरी और उसके व्याकरण पर तमाम पुस्तकें लिखीं तो डॉ. एल.एफ. रूनाल्ड ने **1873** से **1877** तक भारत प्रवास के दौरान हिन्दी व्याकरण पर काफी कार्य किया और लंदन से इस विषय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित करायी। सन् **1865** में एक राजाज्ञा के तहत लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसायटी में हिन्दी सहित भारत में मुद्रित सभी भाषाओं के अखबार, पत्रिकायें व पुस्तकें आने लगीं। **1935** में बेल्जियम के नागरिक डॉ. कामिल बुल्के इसाई धर्म प्रचार के लिए भारत आए पर फ्रेंच, अंग्रेजी, फ्लेमिश, आयरिश भाषाओं पर अधिकार होने के बाद भी हिन्दी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम चुना। अपने हिन्दी ज्ञान में वृद्धि हेतु उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और तुलसी दास को अपने प्रिय कवि के रूप में चुनकर 'रामकथा उद्भव और विकास' पर डी. फिल की उपाधि भी प्राप्त की। स्पष्ट है कि हिन्दी एक लम्बे समय से विदेशियों को भी आकर्षित करती रही है।

देश में नई पीढ़ी पर भले ही अंग्रेजी का भूत चढ रहा हो विदेशों में हिंदी की महत्ता पिछले सालों में काफी बढ़ी हैं। आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यंमार, त्रिनिदाद-टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी-भाषी हैं, में भी बोली जाती है। मॉरीशस, त्रिनिदाद-टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, द. अफ्रीका जैसे देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे हैं। विदेशों विश्वविद्यालयों ने इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आज **150** से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है।

अमेरिका में भाषा आधारित गणना की एक रिपोर्ट के अनुसार वहाँ **65** लाख लोग हिन्दी बोलते हैं, जबकि **8** लाख से ज्यादा लोग भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ बोलते है। गौरतलब है कि अमेरिका में **32** विश्वविद्यालयों ओर शिक्षण संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई होती है। अमेरिका में टेक्सास के स्कूलों में पहली बार 'नमस्ते जी' नामक हिन्दी की पाठ्यपुस्तक को हाईस्कूल के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। **480** पेज की इस पुस्तक को भारतवंशी शिक्षक अरूण प्रकाश ने आठ सालों की मेहनत से तैयार की है। अरूण प्रकाश **80** के दशक में पढ़ाई और व्यापार के लिए अमेरिका गए थे। **1989** में जब पहली बार उन्होंने टेक्सास के एक स्कूल में हिंदी पढ़ाना शुरू किया तो उनकी कक्षा में केवल आठ छात्र पहुँचे। इनमें से सात भारतीय मूल के थे। तभी से उन्होंने इस संबंध में प्रयास शुरू कर दिये।

ब्रिटेन के लंदन विश्वविद्यालय, कैंब्रिज और यॉर्क विश्वविद्यालय में भी हिंदी का अध्ययन होता है। जर्मनी के **15** शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। यहां कई संगठन हिंदी के प्रचार का काम करते हैं। हॉलैण्ड में **1930** से हिंदी का अध्ययन हो रहा है। आज यहाँ के चार विश्वविद्यालयों ने इसे प्रमुख विषय के रूप में अपना रखा है। चीन की बात करें तो यहां **1942** में हिंदी को अध्ययन का एक प्रमुख विषय मानने की शुरूआत हुई। चीन में पहली बार हिंदी रचनाओं का अनुवाद कार्य **1957** में शुरू हुआ और इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए बीजिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विड हान ने तुलसीदास कृत रामचरित मानस का चीनी

भाषा में अनुवाद किया। इटली के लोग भी भारत की संस्कृति से रूबरू होने के लिए हिंदी सीखने की इच्छा रखते हैं। रूस में बड़े स्तर पर हिंदी रचनाओं और ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद कार्य होता है। यहां के लोगों में हिन्दी सीखने की अत्यधिक ललक है। रूसी लोग हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों के दीवाने हैं। फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालय की बात करें तो वहाँ हर साल **60-70** विद्यार्थी हिंदी अध्ययन के लिए प्रवेश लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा और मेलबर्न विश्वविद्यालय में भी हिंदी पढ़ाई जाती है। विएना विश्वविद्यालय और बेल्जियम के तीन विश्वविद्यालयों में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। जापान में भी हिंदी का अहम स्थान है। जापान रेडियो से पहला हिंदी कार्यक्रम **1950** में प्रसारित हुआ था। फिजी में व्यापार, बाजार, कारखानों जैसे सभी क्षेत्रों में हिन्दी का दबदबा है। मारीशस में भी हिंदी काफी लोकप्रिय है। यहां के **260** प्राथमिक स्कूलों में नियमित तौर पर हिंदी की पढ़ाई होती है।

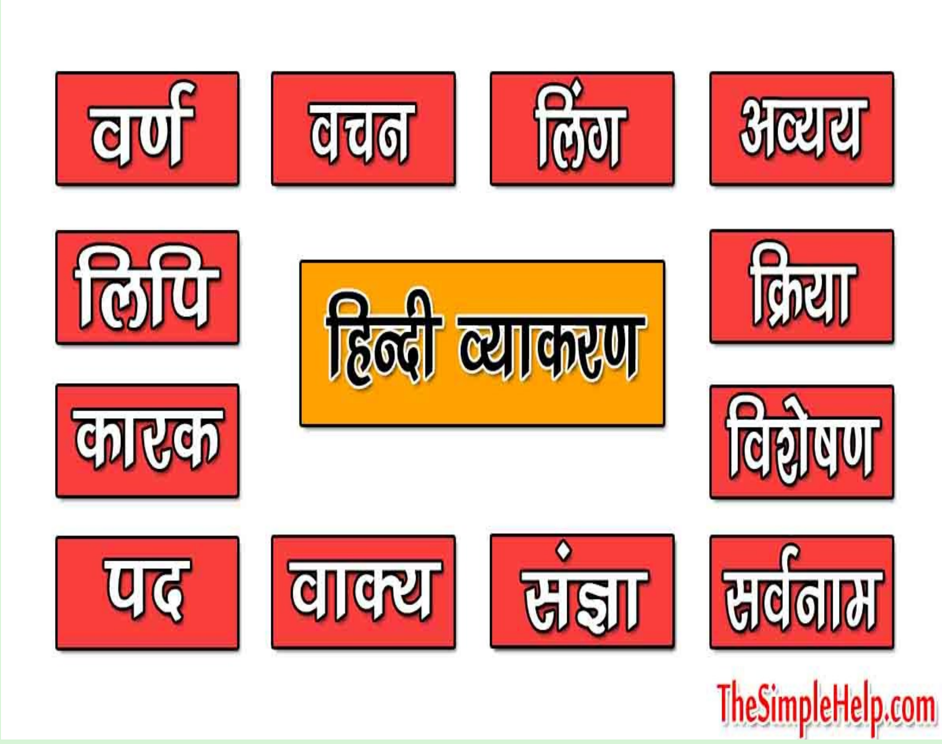

ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों-कॉलेजों में भी हिंदी की पढ़ाई शामिल की जा रही है और दक्ष प्रवासी भारतीयों की इसमें मदद ली जा रही है। मेलबर्न के 'ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टीट्यूट' (एआइआइ) ने सरकार को सौंपी अपनी रिपोर्ट में तर्क दिया है कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को शमिल किया जाए और ऑस्ट्रेलिया की एशिया नीति का यह अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया के जाने-माने पत्रकार हमिश मैकडोनल्ड की रिपोर्ट में सरकार द्वारा वर्ष **2012** में पेश किये गए एशिया श्वेतपत्र में हिंदी को चार प्राथमिक भाषाओं (चाइनीज, जापानी, इंडोनेशियाई) के रूप में माना गया था।

भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रांति के इस दौर में जहाँ एक ओर 'सभ्यताओं का संघर्ष' बढ़ा है, वहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियां की नीतियों ने भी विकासशील व अविकसित राष्ट्रों की संस्कृतियों पर प्रहार करने की कोशिश की है। सूचना क्रांति व उदारीकरण द्वारा सारे विश्व के सिमट कर एक वैश्विक गाँव में तब्दील होने की अवधारणा में अपनी संस्कृति, भाषा, मान्यताओं, विविधताओं व संस्कारों को बचाकर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जहाँ हमारी प्राचीन सम्पदाओं का पेटेंट कराने में जुटी हैं वहीं इनके ब्राण्ड-विज्ञापनों ने बच्चों व युवाओं की मनोस्थिति पर भी काफी प्रभाव डाला है, निश्चिततः इन सबसे बचने हेतु हमें अपनी भाषा की तरफ उन्मुख होना होगा। यदि भारतीय फिल्में विदेशों में अच्छा व्यवसाय कर रही हैं तो विदेशों में बसे भारतीयों का प्रमुख योगदान है। यह वर्ग ऐसा है जो रोजगार की खोज में विदेशों में भले ही जा बसा, पर मातृभूमि से लगाव जस का तस है। उनकी रोजी-रोटी की भाषा भले ही दूसरी हो, पर उनका मन हिन्दी में ही रमता है। हम इस तथ्य को नक्कार नहीं सकते कि हाल ही में प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में हिन्दी के तमाम प्रचलित शब्दों, मसलन- आलू, अच्छा, अरे, देसी, फिल्मी, गोरा, चड्डी, यार, जंगली, धरना, गुण्डा, बदमाश, बिंदास, लहंगा, मसाला इत्यादि को स्थान दिया गया है।

अमेरिका जैसा देश भी हिंदी के प्रभाव से अछूता नहीं है। तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिन्दी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषायें सीखने को कहा। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और अपनी पहचान के अलावा किसी को श्रेष्ठ नहीं मानता, हिन्दी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चिततः भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि-''हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे **21**वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखनी चाहिए।'' इसी क्रम में अगले अमरीकी राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने भी अपने चुनावी घोषणा पत्र की प्रतियां अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी और मलयालम में भी छपवाकर वितरित कीं। बराक ओबामा के राष्ट्रपति चुनने के बाद सरकार की कार्यकारी शाखा में राजनैतिक पदों को भरने के लिए जो आवेदन पत्र तैयार किया गया उसमें **101** भाषाओं में भारत की **20** क्षेत्रीय भाषाओं को भी जगह दी गई। इनमें अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, माघी व मराठी जैसी भाषायें भी शामिल हैं, जिन्हें अभी तक भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान तक नहीं मिल पाया है।

इसी प्रकार जब दुनिया भर में अंग्रेजी का डंका बज रहा हो, तब अंग्रेजी के गढ़ लंदन में बर्मिंघम स्थित मिडलैंड्स वर्ल्ड ट्रेड फोरम के अध्यक्ष पीटर मैथ्यूज ने ब्रिटिश उद्यमियों, कर्मचारियों और छात्रों को हिंदी समेत कई अन्य भाषाएं सीखने की नसीहत दी है। यही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान हिन्दी का अकेला ऐसा सम्मान है जो किसी दूसरे देश की संसद, ब्रिटेन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में प्रदान किया जाता है। आज अंग्रेजी के दबदबे वाले ब्रिटेन से हिन्दी लेखकों का सबसे बड़ा

दल विश्व हिन्दी सम्मेलन में अपने खर्च पर पहुँचता है। स्पष्ट है कि हिन्दी आज दूसरे देशों में भी अपनी कीर्ति-पताका फहरा रही है। विदेश मंत्रालय ने इसी रणनीति के तहत प्रति वर्ष दस जनवरी को ‘विश्व हिन्दी दिवस’ मनाने का निर्णय लिया है, जिसमें विदेशों मे स्थित भारतीय दूतावासों में इस दिन हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है।

हाल ही में विश्व बैंक ने अपनी छवि को अधिक लोकतांत्रिक बनाने की नीति के तहत ’ओपन डाटा’ नामक एक कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसके जरिए विश्व बैंक दुनिया भर में अपनी वित्तीय पोषित परियोजनाओं की नवीनतम जानकारी एन्ड्रॉयड फोन, आईफोन और आईपैड पर मुफ्त में मुहैया कराएगा। खास बात यह है कि विश्व बैंक से जुड़ी वित्तीय जानकारियाँ अब हिंदी में भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। अभी तक यह होता रहा है कि विश्व बैंक से जुड़े आंकड़े अंग्रेजी भाषा की समाचार एजेंसियों में आने या उनके अनुवाद के बाद ही हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो पाते थे। निश्चिततः इससे हिंदी पत्रकारिता की दुनिया में एक बड़ा परिवर्तन आयेगा और हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराए जाने से अंग्रेजी पर निर्भरता भी कम होगी।

निश्चिततः भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया के सबसे बडे लोकतंत्र, सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र और सबसे बडे उपभोक्ता बाजार की भाषा हिन्दी को नजर अंदाज करना अब सम्भव नहीं रहा। प्रतिष्ठित अंग्रेजी प्रकाशन समूहों ने हिन्दी में अपने प्रकाशन आरम्भ किए हैं तो बीबीसी, स्टार प्लस, सोनी, जीटीवी, डिस्कवरी आदि अनेक चैनलों ने हिन्दी में अपने प्रसारण आरम्भ कर दिए हैं। हिन्दी फिल्म संगीत तथा विज्ञापनों की ओर नजर डालने पर हमें एक नई प्रकार की हिन्दी के दर्शन होते हैं। यहाँ तक कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां के विज्ञापनों में अब क्षेत्रीय बोलियों भोजपुरी इत्यादि का भी प्रयोग होने लगा है और विज्ञापनों के किरदार भी क्षेत्रीय वेश-भूषा व रंग-ढंग में नजर आते हैं। निश्चिततः मनोरंजन और समाचार उद्योग पर हिन्दी की मजबूत पकड़ ने इस भाषा में सम्प्रेषणीयता की नई शक्ति पैदा की है।

आज की हिन्दी वो नहीं रही..... बदलती परिस्थितियों में उसने अपने को

परिवर्तित किया है। विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर तमाम विषयों पर हिन्दी की किताबें अब उपलब्ध हैं, क्षेत्रीय अखबारों का प्रचलन बढ़ा है, इण्टरनेट पर हिन्दी की बेबसाइटों में बढ़ोत्तरी हो रही है, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कई कम्पनियों ने हिन्दी भाषा में परियोजनाएं आरम्भ की हैं। सूचना क्रांति के दौर में कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रतिष्ठान सी-डैक ने निःशुल्क हिन्दी साफ्टवेयर जारी किया है, जिसमें अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। माइक्रोसाफ्ट ने ऑफिस हिन्दी के द्वारा भारतीयों के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग आसान कर दिया है। आईबीएम द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर में हिन्दी भाषा के **65,000** शब्दों को पहचानने की क्षमता है एवं हिन्दी और हिन्दुस्तानी अंग्रेजी के लिए आवाज पहचानने की प्रणाली का भी विकास किया गया है जो कि शब्दों को पहचान कर कम्प्यूटर लिपिबद्ध कर देती है। एचपी कम्प्यूटर्स एक ऐसी तकनीक का विकास करने में जुटी हुई है जो हाथ से लिखी हिन्दी लिखावट को पहचान कर कम्प्यूटर में आगे की कार्यवाही कर सके। चूँकि इण्टरनेट पर ज्यादातर सामग्री अंग्रेजी में है और अपने देश में मात्र **13** फीसदी लोगों की ही अंग्रेजी पर ठीक-ठाक पकड़ है। ऐसे में गूगल द्वारा कई भाषाओं में अनुवाद की सुविधा प्रदान करने से अंग्रेजी न जानने वाले भी इण्टरनेट के माध्यम से अपना काम आसानी से कर सकते हैं। आज पूरी दुनिया में ब्लॉगिंग और सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का क्रेज छाया हुआ है। ब्लॉगिंग में भाषा की वर्जनाएं टूट रही हैं, तभी तो हिन्दी देश-विदेश व उत्तर-दक्षिण की सीमाओं से परे सरपट दौड़ रही है। आज एक लाख से भी ज्यादा हिंदी ब्लॉग हैं। इंटरनेट पर हिन्दी का विकास तेजी से हो रहा है। गूगल से हिन्दी में जानकारियाँ धड़ल्ले से खोजी जा रही हैं। पहले जहाँ तमाम फॉण्ट के चलते हिन्दी का स्वरूप एक जैसा नहीं दिखता था, वहीं वर्ष **2003** में यूनीकोड हिंदी में आया और इसके माध्यम से हिन्दी को अपने विस्तार में काफी सुलभता हासिल हुई। इसने जहाँ वर्णमाला के जटिल शब्दों को अपने में समेट लिया है, वहीं भारत सरकार भी वेदों, उपनिषदों, पुराणों इत्यादि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को इसमें जोड़ने की कोशिश कर रही है। **14** सितम्बर, **2011** को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट ट्विटर ने हिंदी में भी सीधे लिखने की सुविधा प्रदान कर दी है।

इंटरनेट के इस दौर में महत्वपूर्ण हिन्दी किताबों के ई प्रकाशन के साथ-साथ तमाम हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं भी अपना ई-संस्करण जारी कर रही हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा व साहित्य को नए आयाम मिले हैं।

आज हिन्दी के वेब पोर्टल समाचार, व्यापार, साहित्य, ज्योतिषी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं तमाम जानकारियां सुलभ करा रहे हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख हिन्दी पत्रिकाएं हैं- हिंदी का पहला पोर्टल वेब दुनिया, अनुभूति, अभिव्यक्ति, सृजनगाथा, हिन्दयुग्म, रचनाकार, साहित्य कुंज, साहित्य शिल्पी, लघुकथा डॉट काम, स्वर्गविभा, हिंदी नेस्ट, हिंदी चेतना, हिंदीलोक, कथाचक्र, काव्यालय, काव्यांजलि, कवि मंच, कृत्या, कलायन, आर्यावर्त, नारायण कुञ्ज, हंस, अक्षरपर्व, अन्यथा, आखर (अमर उजाला), उदन्ती, उद्गम, कथाक्रम, कादम्बिनी, कथादेश, गर्भनाल, जागरण, तथा, तद्भव, तहलका, ताप्तिलोक, दोआबा, नया ज्ञानोदय, नया पथ, परिकथा, पाखी, दि संडे पोस्ट, प्रतिलिपि, प्रेरणा, बहुवचन, भारत दर्शन, भारतीय पक्ष, मधुमती, रचना समय, लमही, लेखनी, लोकरंग, वागर्थ, शोध दिशा, संवेद, संस्कृति, समकालीन जनमत, समकालीन साहित्य, समयांतर, प्रवक्ता, अरगला, तरकश, अनुरोध, एक कदम आगे, पुरवाई, प्रवासी टुडे, अन्यथा, भारत दर्शन, सरस्वती पत्र, पांडुलिपि, हिंदी भाषी, हिंदी संसार, हिंदी समय, हिमाचल मित्र इत्यादि। इसी कड़ी में 'कविता कोश' और 'गद्य कोश' ने भी हिन्दी साहित्य के लिए मुक्ताकाश दिया है। यहाँ तमाम पुराने और प्रतिष्ठित साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं में रचनाओं के संचयन के साथ-साथ नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ भी पढ़ी जा सकती हैं। निश्चिततः इससे हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर एक नवीन प्रतिष्ठा मिली है। यह अनायास ही नहीं है कि **51** करोड़ लोगों तक पहुँच के साथ अंग्रेजी यदि दुनिया की सबसे बड़ी संपर्क -भाषा है तो **49** करोड़ के साथ हिन्दी दूसरी संपर्क-भाषा है। कभी ब्रिटेन ने हम पर राज किया था पर जब वहीं के एक प्रोफेसर रूपर्ट स्नेल हिन्दी के पक्ष में बोलते हैं, तो गर्व होना लाजिमी भी है- "हिन्दी जिंदगी का हिस्सा है। हिन्दी जिंदा है। हिन्दी किसी एक वर्ग या वर्ण या जाति या धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं है। हिन्दी भारत की है, मारीशस की है, इंग्लैंड की है, सारी दुनिया की है। हिन्दी आपकी है, हिन्दी मेरी है।"

कृष्ण कुमार यादव

हि०प्र०विश्वविद्यालय की मेगा एलुमनी मीट के दौरान गीता कपूर सम्मानित

चन्द्रकान्त पाराशर शिमला हिल्स

शिमला : 21 अगस्त, 2022 श्रीमती गीता कपूर, निदेशक (कार्मिक), एसजेवीएन को हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय एलुमनी एसोसिएशन की भव्य मेगा एलुमनी मीट के दौरान सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय राज्यसभा सदस्य जे. पी. नड्डा उपस्थित थे। इस समारोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, जय राम ठाकुर ने की। कार्यक्रम के दौरान गीता कपूर के साथ विश्वविद्यालय के अन्य प्रतिष्ठित और विख्यात पूर्व छात्रों को सम्मानित किया गया। इन प्रतिष्ठित और विख्यात पूर्व छात्रों का अभिनंदन इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है तथा विश्वविद्यालय को उन पर गर्व है।

ज्ञातव्य है कि गीता कपूर ने हि. प्र. विश्वविद्यालय बिजनेस स्कूल से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स डिग्री की है। उन्होंने 1986 में पंजाब वायरलेस सिस्टम्स, मोहाली के साथ अपने कैरियर का आरंभ किया और वर्ष 1992 में एसजेवीएन मानव संसाधन टीम में पहली महिला अधिकारी के रूप में शामिल हुई। उन्हें कोर मानव संसाधन के कार्यों में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। उन्होंने निगम में कई नीतिगत पहलों का नेतृत्व किया है जो एसजेवीएन की मजबूत मानव संसाधन संस्कृति से प्रदर्शित होता है।

वह एसजेवीएन के निदेशक बोर्ड में पहली पूर्णकालिक महिला निदेशक भी हैं और वर्तमान में, वह एसजेवीएन अरुण-3 डेवलपमेंट कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, एसजेवीएन थर्मल प्राइवेट लिमिटेड और एसजेवीएन ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के निदेशक मंडल में भी हैं। गीता कपूर ने कार्य को अपना जुनून माना है और हमेशा समाज के लिए अधिक से अधिक योगदान देने के लिए तत्पर रहती हैं।

इस मेगा कार्यक्रम में हि प्र विश्वविद्यालय के अन्य पूर्व छात्रों, अधिकारियों और प्रोफेसरों के साथ हिमाचल प्रदेश के माननीय शिक्षा मंत्री, गोविंद ठाकुर, माननीय शहरी विकास मंत्री, सुरेश भारद्वाज, विख्यात अभिनेता, अनुपम खेर, निदेशक, एम्स, नई दिल्ली डा०रणदीप गुलेरिया की गरिमामय उपस्थित रही।

शक्ति

आगे-पीछे विशाल महासागर की उत्तांग लहरों का गर्जन और छोटी सी कश्ती में सवार मेरी अन्तरात्मा.ज़रा भी भय नहीं.जिसने जीवन रूपी भवसागर को पार कर लिया उसे यह काला सागर क्या डरा सकता था?

तभी एक अन्य कश्ती पर सवार सभी लोग अदृश्य हो गये केवल खेवनहार ही बचा था.जो मेरी अन्तरात्मा को अपनी ओर खींच रहा था.पर दोनों कश्तियों के बीच रेतीला सागर था जिसे पार करके ही उस कश्ती पर जाया जा सकता था.

रेत! धूल और अंधड!

अंतरात्मा ने इधर-उधर देखा.कोई विकल्प नहीं उस कश्ती तक पहुँचने का.वह अधीर थी वहाँ जाने को.अचानक उसे लगा वह बहुत हल्की हो गई है ऊँची छलाँग लगाने को.

बस, ज़रा सा ज़ोर लगाया और वह हवा में उछल गई. एक क्षण लगा और वह परमात्मा रूपी खेवनहार की कश्ती पर पहुँच गई.

अंतत: जीवन भर की अनन्य भक्ति की शक्ति ने आत्मा को आवागमन के चक्र से मुक्ति दिला दी.

शील निगम

ग़ज़ल

जीना बड़ा मुश्किल है जीने की कला रखना।
धरती पे नज़र रखना आकाश जगा रखना।

भाड़े के मकानों से बरकत नहीं मिलती है,
छोटा-सा कहीं अच्छा घर अपना बना रखना।

गलियों का भरोसा क्या गुमराह करें किसको,
गुमने के अंदेशे में लिख करके पता रखना।

बरसात के मौसम में कब दौड़ के चलना हो,
हर हाल खड़े रहना कदमों को उठा रखना।

अनुमान नहीं लगता कब दोस्त बने दुश्मन,
कुछ फर्क अगर देखो औरत का कहा करना।

ख्वाबों का भरोसा क्या कब आएं चले जाएं,
मेहमां हैं मगर दिल के दरवाजा खुला रखना।

माटी की कसम लेकर दावे से अनुज कहते,
संसार बड़ा होगा आकार बड़ा रखना।

रामानुज श्रीवास्तव

जय-जय भारत!

हिंद ही अपना वतन है
हिंद अपनी शान है
हिंद ही सर्वत्र विजयी
हिंद ही अभिमान है।

झूमता अपना तिरंगा
देश का हर जन तिरंगा
तन तिरंगा,मन तिरंगा
गुनगुनाए यह तिरंगा।

हर शिखर पर आरूढ़ है
यह स्नेह है,आश्रय भी है
प्रेम का प्रतिरूप है यह
अरि का भयंकर काल भी है।

हमारे गीत पर झूमे तिरंगा
जीत पर झूमे तिरंगा
नित शिखर पर गीत गाए
शान से प्यारा तिरंगा।

भारत भरत का आज भी है
वीरता जन-जन भरी है
जो भी विरोधी सर उठाए
कुचलने की यह घड़ी है।

आतंक का उत्तर है भारत
मधुरता है,प्रीत भारत
दुश्मनों के फन को कुचले
विजय का पर्याय भारत।

विश्व मे लहरे तिरंगा!
चहुँ ओर ही गरजे तिरंगा!
भारत शिखर पर ही सदा हो!
जय-जय भारत!जय तिरंगा!
जय-जय भारत!जय तिरंगा!

अनिल कुमार मिश्र

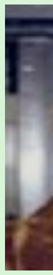

लघुकथा

सीता राम गुप्ता

समर्पण

किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि इतना बुरा समय भी आ सकता है। कोरोना संक्रमण ने लोगों को हर तरह से तबाह कर डाला। वे लोग खु”किस्मत हैं जो इसकी चपेट में आकर भी ज़िंदा बच गए। लोग बच भी गए तो सड़क पर आ गए। लगातार एक साल तक कोविड के रोगियों का उपचार करते–करते एक दिन मेरा भाई भी इस भयानक संक्रमण की चपेट में आ गया। पहले दिल्ली के दो हस्पतालों में और बाद में गुरुग्राम के एक नामी हस्पताल में कई हफ़्तों तक रहने के बावजूद भाई की हालत में सुधार होने के बजाय उसकी हालत बिगड़ती चली गई तो उसे एक्मो सपोर्ट के लिए एयर एंबुलेंस के ज़रिए तेलंगाना के एक नामी हस्पताल में ि”ाफ़्ट किया गया। दे”ा के अधिकां”ा भागों में लॉकडाउन अथवा कर्फ़्यू लगा हुआ था लेकिन गनीमत थी कि हवाई सेवा उपलब्ध थी। जगह भी मिल गई। भाई को एयरलिफ़्ट करवाने के बाद मैं अपनी भाभी के साथ एयर एंबुलेंस के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थी।

भाई को एडमिट करवाने के बाद मुझे घर की चिंता भी सताने लगी। घ ार पर मेरा भतीजा, मम्मी–पापा और दादी ही रह गए थे। सभी का बुरा हाल था। एक हफ़्ते के बाद मैं वापस दिल्ली आई और मम्मी व अपने एक कजिन को तेलंगाना के लिए रवाना कर दिया। कुछ दिनों के बाद वहाँ से फोन आया कि पापा और बच्चे को भी भेज दो क्योंकि भाभी को अपने बेटे और पापा को देखे हुए काफी समय हो गया था। मेरा भी भाई के पास पहुँचना ज़रूरी था लेकिन दादी? दादी तो किसी भी सूरत में हमारे साथ नहीं जा सकती थीं क्योंकि दादी न तो चल–फिर ही सकती हैं और न ही अपना कोई काम ही स्वयं कर सकती हैं। उनके लिए तो चौबीसों घंटे एक अटेंडेंट चाहिए। दिन में उनकी सहायता के लिए एक सहायिका रखी हुई है और रात के समय मम्मी और घर के अन्य सदस्य उनकी देखभाल करते हैं। ऐसी स्थिति में उनको तेलंगाना ले जाना मु”किल ही नहीं असंभव था।

“क्यों न भाई के ठीक होकर लौटने तक दादी को बुआ के पास भेज दिया जाए?” बहुत सोच–विचार करने के बाद मेरे मन में ये विचार आया। जब दादी से इस बारे में बात की तो उन्होंने बुआ के घर जाने से साफ मना कर दिया। कारण स्पष्ट था। दादी बुआ के घर का पानी तक नहीं पीतीं फिर इतने दिनों तक वहाँ रहना कैसे संभव होगा? रात और दिन दो ि”फ़्टों में नर्स अथवा सहायिकाओं की व्यवस्था की जा सकती थी लेकिन खाना? मुझे याद है दादी ने एक बार ग़लती से बुआ के द्वारा लाए गए फलों में से एक सेब खा लिया था। जब उन्हें इस बात का पता चला तो वे बहुत परे”ाान हुईं। कहा कि मेरा उम्र भर का व्रत भंग हो गया। उस एक सेब के ही नहीं पूरे फलों की क़ीमत से कई गुना पैसे बुआ को देने के बाद भी महीनों तक उनकी परे”ाानी कम नहीं हुई। एक तरह से वे एक प्रकार के अपराध –बोध से ग्रस्त रहने लगीं।

ऐसे में उन पर बुआ के यहाँ जाने के लिए ज़ोर डालना ठीक नहीं लगा। लेकिन अन्य कोई उपाय न होने से भाई की बीमारी का वास्ता दिया। जब भाई की बीमारी का वास्ता दिया तो दादी कहने लगीं, “ भगवान मुझे उठा ले और मेरे पोते को ठीक कर दे पर आख़िरी वक़्त में बेटी के घर मत भेज।” इस पर मैंने दादी से कहा, “दादी हमारे या तेरे ऐसा सोचने से कुछ नहीं होगा। इस समय भाई को हम सब की ज़रूरत है। हम सबको उसके पास जाना ही होगा। और तेरी हालत सफर करने और हमारे साथ जाने की होती तो हम सबसे पहले तुझे ही अपने साथ ले जाते।” दादी चुप हो गईं तो मैंने कहा, “ दादी तुझे अपनी ज़िद प्यारी है या भाई की ज़िंदगी?” ये सुनना था कि दादी मोम की तरह पिघल गईं। कहने लगीं, “ बेटा श्रुति! तू जहाँ कहेगी मैं वहाँ रह लूँगी। तुम सब जाओ और मेरे पोते को जल्दी से अच्छा करके मेरे पास ले आओ।”

बाल कविता

किताब तुम क्यों नहीं झूठ बोलते
क्यों तुम तो जलाएं जाते हो इस दुनिया में
तुम्हारे साथ भी तो किया जाता है
गलत व्यवहार
फिर तो तुम्हें भी

करनी चाहिए
चापलूसी बोलना चाहिए झूठ
दुसरे के लिए नहीं बल्कि अपने बचाव के लिए।

तुम सच उगलते आ रहे हो
प्राचीन काल से आधुनिक काल तक
मध्यकाल में भी तुम्हें किसी ने नहीं उकसाया
स्वर्ण मुद्राएं देकर
किसी ने नहीं कहा जोर से
धमका कर की बदलो
मेरा सारा इतिहास और भूगोल।

बताना आने वाली जनमानस को हमारी उपलब्धियां
करना प्रसंशा ताकि आदर्श रहे
और कहीं जिन्दा उनके दिलों दिमाग में
लेकिन तुम तो सब सच सच कह डाले
बात भी बता दी चारणों की और दरबारी कविओं की
तुम उनसे ही आज सामने आये हो
उनकी बातें विचारों को ही पढ़ते हैं हम
लेकिन यकीन करते हैं तुम पर किसी
इतिहासकार दार्शनिक लेखक कवि पर नहीं।

आलोक रंजन

डॉ मनोहर अभय

पक गए कान
दन्त कथाओं से
करे कौन विश्वास ?

चले टूटी पगडंडी पर
राहें अधबनी रहीं
वही गमछा पुराना
नई चादर बुनी नहीं
उगे खरपतवार
खेत खा गए कपास

टिमटिमाती रोशनी
ढिबिया बचकानी
राजा औ' रानी की
सुनी- अनसुनी कहानी
लंगड़े सिंहासन
बने रहे राजसी लिबास

हवाएँ खामोश बहुत
बादलों का शोर
सूखा का सूखा रहा
आँचल का छोर
पी गई बाढ़
मछेरी का निवास

टकराए अँधेरे से
जुगनुओं के सहारे
नदी पार जाने को
तोड़े सब किनारे
मुँह लटकाए
बीच धार
ठाड़े उदास

पीतांबरी ओढ़नी
ओढ़ेंगी फसलें
कलियाँ सूर्यमुखी की
सुनाएँगी गजलें
छोड़ेगा सूरज
जब आख़िरी उसाँस !!

हिंदी बने राष्ट्रभाषा

हमारा हो निज भाषा पर अधिकार,
प्रयोग हिंदी का, करें इसका विस्तार।
निज भाषा निज उन्नति का कारक,
निज भाषा से मिटे सभी का अंधकार।।

हिंदी है हिंदुस्तान की रानी,
हो रही अब सभी से बेगानी।
अन्य भाषा संग, हिंदी अपनाओ,
ताकि हिंदी संग ना हो बेमानी।।

माथे की शोभा बढ़ाती बिंदी,
निज भाषा जान है हिन्दी।
आओं इसका विस्तार करें,
ताकि करें गर्व नई आबादी।।

हिंदी हैं हम सब की मातृभाषा,
छोड़ इसे ना करो तुम निराशा।
हिंदी बोलने पे तुम मत शरमाओ,
ताकि हिंदी बने हमारी राष्ट्रभाषा।।

हिंदी हैं अपनी राजभाषा,
बनाना इसे अब राष्ट्रभाषा।
हम निज भाषा से प्यार करें
ताकि इसे ना मिले निराशा।।

महात्मा गांधी जी कहते थे,
हिंदी है जनमानस की भाषा ।
बापू ने कहा उन्नीस सौ अठारह में,
बनाओ सब हिंदी को राष्ट्रभाषा।।

पहली अंग्रेजी, फिर चीनी,
ज्यादा बोले जाने वाली है भाषा।
हर कार्य में हिंदी को अपनाकर,
बनाओं इसको सब पहली भाषा।

अंकुर सिंह

दोहरा चरित्र

लघुकथा

मैं शहर एक जरूरी काम से आया था। काम निपटाने के बाद आज ट्रेन से अपने गाँव जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचा। सोचने लगा कि मैं शहर से उल्टा गाँव आया था और यहीं का होकर रह गया। अपनी अंतर्रात्मा की आवाज़ सुनकर ही गाँव में ठहर गया। ट्रेन में बहुत भीड़ दिख रही थी। मैं बिना रिजर्वेशन के था, सो धक्का-मुक्की कर ट्रेन में चढ़कर एक सीट पा लिया। अचानक एक अधेड़ उम्र की गरीब महिला ने भी ट्रेन की जनरल बोगी में प्रवेश किया, किंतु एकाएक उसकी नज़र खिड़की से होते हुये एक नौजवान पर पड़ी जो कि बोगी में सीट घेरकर बैठा हुआ था।

उसके पास पहुँचकर वह बोली - " भैया मुझे थोड़ी जगह देकर सीट पर बैठने दो, बड़ी मेहरबानी होगी।"

वह नौजवान बोला - " अरे अब पूरी बोगी भर चुकी है जाईये...पीछे और किसी बोगी में जाकर बैठना।"

उसने पुनः निवेदन किया "भैया बैठा लीजिये न मैं देर तक खड़ी नहीं रह पाऊँगी। मुझे दूर जाना है।"

नौजवान फिर बोला - "तो जल्दी आना चाहिये तुम्हारे लिये मैं सीट तो नहीं छोड़ सकता? वो उसकी ओर इशारा करते हुये बोला - "चलो जाओ यहां से ...!!!"

तभी सारी घटना को टकटकी लगाए मैंने कहा - "बहन रूकिये जरा! आप मेरी सीट पर आकर बैठ जाइए, मैं अपनी सीट से उठ गया और वह आकर बैठ गई।

अगले स्टेशन पर एक सुन्दर सी युवती भी उसी बोगी में चढ़ी और उसी नौजवान से बैठने की जगह देने का आग्रह पहली वाली महिला की तरह ही किया।

उस सुन्दर युवती को देखकर मुंह से लार टपकाते नौजवान बोला - "क्यों नहीं मोहतरमा? और कहते हुए सीट से खिसककर जगह दे दी।"

बोगी में बैठे दूसरे यात्री भी उसके इस दोहरे चरित्र को देखकर आश्चर्यचकित और उसकी ओर देखकर मन ही मन जैसे उसे बुरा समझने लगे।

- सूर्यदीप कुशवाहा

इतराया तिरंगा...

घर घर जब फहराया तिरंगा
सच मानों इतराया तिरंगा।
वंदे मातरम राष्ट्र गान कर
सबने मिलकर गाया तिरंगा ॥
उत्साह बच्चों में दिया दिखाई
तरुणों की मचली तरुणाई
ना रही पीछे माता-बहिनें
चमक बूढ़ों के चेहरों पे आई
बही आज गीतों की गंगा
सच मानों इतराया तिरंगा।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
महकी महकी लगी प्रतिक्षण
अमृत महोत्सव के अवसर पर
सबने लगाया अपना तन मन
दिल्ली मुंबई या हो दरभंगा
सच मानों इतराया तिरंगा।
ये उत्साह उमंग ना कम हो
हर भारतवासी में दम हो
रखे खोप दुश्मन के मन में
हर पल अपना अति उत्तम हो
हर कोई यहाँ दिखे चंगा।
घर घर जब फहराया तिरंगा
सच मानों इतराया तिरंगा ॥

- व्यग्र पाण्डे

अपनी अपनी मैराथन दौड़

श्यामल बिहारी महतो

आज़ का दौर मैराथन का दौर है। भागम भाग का दौर है। आपाधापी का दौर है। और आत्महत्याओं का भी दौर है ! आप चौंकिए मत,हर युग में काल खंडों की अलग-अलग विशेषताएं रही हैं, अलग-अलग धारणाएं रही हैं। वर्तमान काल खंड,आपा धापी, हत्या-आत्महत्या का प्रचण्ड काल का अकल्पनीय दौर है। सबको लगता है कि हर समय कुछ नया और खाश होने जा रहा है। पलक झपकते ही पीछे छूट जाने का खतरा है,सो सब जल्दी में हैं। सब दौड़ रहे हैं- हांफ रहे हैं। उसी अनुपात में खबरिया चैनल वाले भी दौड़ रहे हैं और उससे भी कहीं तेज रफ्तार से हांफ भी रहे हैं।

हमारे बच्चे जल्दी में हैं। नौजवान माता पिता जल्दी में हैं। नये बनते - बिगड़ते, पश्चिमी धून वाले समाज जल्दी में हैं। किसी की गाड़ी आपकी गाड़ी से आगे कैसे और क्यों निकल गई-बहुत बड़ी घटना हो गई। यह और इसका फैसला जान लेकर और जान देकर ही किया जा सकता है। आज के नौजवान कार-मोटर साईकिल चलाते समय यह भूल जाते हैं कि नीचे जमीन भी है - जीव जंतु भी हैं। वे हरदम हवा में उड़ना चाहते हैं। एक दूसरे को पछाड़ कर आगे निकल जाना चाहते हैं नतीजा आये दिन कितने सड़क पर ही दम तोड देते हैं। कितनों की मांग और कितनों की गोद सुनी हो जाती हैं तब कोई वर पूजा (सावित्री वट वृक्ष पूजा) कोई विपदा तारनी पूजा। कोई देवी शक्ति उनकी जान बचाने आगे नहीं आती। फिर भी अंध भक्तन औरतों की आंखें नहीं खुलती-तो यह किसका कसूर है ? आज हर तरफ भागम भाग है।

आपा धापी है और उस पर घुड-दौड की प्रवृति हावी है। फिर ऐसी घटनाओं को कौन रोक सकता है, कोई सुपर मैन तो आयेगा नहीं -इसे रोकने के लिए।

जब नव धनाढ्यों के नाबालिग किशोरी-किशोरियों की बेकाबू कार /स्कॉर्पियो की पहियों में जोश भरी रफ्तार बन जाती है तो गरीबों की जान चिंटियों में तब्दील होती चली जाती हैं।

फिल्म अभिनेता सलमान खान और फूटपथियों की घटना को याद कर लीजिए न। आज के जैसा रंग मिजाज रंगीन दुनिया पहले कभी नहीं था न संभव था। हमारे गांव-देहात से आये नौजवानों में भी पढ़ाई-लिखाई को लेकर ललक बढ रही हैं। माता पिता की आशाओं का केंद्र हो जाते हैं। वे भी सपने देख रहा है, सपने तो चारों ओर बिखरे हैं, छोटे-बड़े, रंग बिरंगे सपने। उत्पादों के लम्बे-चौडे होर्डिंग, चारों तरफ पैसे बिखरे हैं। बस बटोरने की ललक होनी चाहिए। गांव देहात में जाइए, सबेरे से शाम तक घर की औरतें काम में लगी रहती हैं और नौजवान जगह जगह बैठे ताश के पत्ते पीट रहे होते हैं या फिर आवारागर्दी या फिर चोरी चकारी में लगे हैं। सपने और साधन दो विपरीत दिशाओं के बीच खड़े ये नौजवान ! बेकार और बेरोजगारी की मार झेलते ये नौजवान, इन्हें आप जब चाहें-जहां चाहें, हथियार बना कर इस्तेमाल कर सकते हैं। ये आपको और आपके इशारों के गुलाम और हाथों के औजार हैं। आप चाहें तो इसे किसी धार्मिक जुलूसों या मंदिर मस्ज़िद में पत्थर बना के फेंक दें और नित नए दंगें करवा लें। आप इन ताश पीटते, रास्ता तलाशते नौजवान के हाथों बंदूक लेकर नक्सली बनवा सकते हैं, यदि आप राजनीति में है तो अपने प्रतिद्वंद्वी का काम तमाम करवा सकते हैं, क्योंकि पेट की आग और भूख के आगे, हाथों की बेकारी और दिलों-दिमाग की लाचारी कुछ भी कर गुजरने से रोक नहीं पाती। इन लोगों के सामने या तो मारो या खुद मरो वाली हालत होती है।

मध्यमवर्गीय लोगों के बीच की हालत भी कुछ ठीक नहीं है बल्कि यहां भी खराब ही खराब होता जा रहा है, यहां भी सब कुछ ऐसा ही हो रहा है लेकिन फटी चादर को पलंग के नीचे छिपा कर रखने की शालीनता और खामोशी के साथ। मध्य वर्ग में महात्वाकांक्षा जान की पिपासा बना हुआ होता है, इस

वर्ग के समाजिक सपने अंग्रेजी स्कूलों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और बड़े बड़े होर्डिंग वाले मेडिकल कॉलेजों से जुड़े हुए होते हैं।

इस वर्ग के नौजवान सत्तर-अस्सी हजार मासिक तक की नौकरी पाने की तमन्ना रखते हैं और पाते भी हैं और लतियाते भी है। क्योंकि उसे एक लाख तक देने की पेशकश कोई विदेशी कंपनी कर सकती हैं। यह सपना आज के शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का है। यहां असफलता का मतलब नीचे गिर कर दफन हो जाना है,सो हत्या-आत्महत्या ज़्यादातर इसी वर्ग की स्वप्ननीली गलियारों से होकर गुजरती हैं। हमने कहीं पढ़ा था कि मां बाप की इच्छानुसार मेडिकल में नहीं आ पाने से अधीर नाम के लड़के ने आत्महत्या कर ली,बाप के लिए उसने एक पत्र छोड़ गया था "मैं जा रहा हूं, वर्ना आपको जाना पड़ता...!" कुछ महीना पहले की एक घटना है, झारखंड वासी एक महत्वाकांक्षी पिता अपने बेटे को एक ऐसा टेनिस खिलाड़ी बनाना चाहते थे जिसका नाम दुनिया में जगमग हो। उसका हर पल पिता की देख रेख में होता । दुनिया तो जगमग नहीं हो सका उस नन्हें पौधे से। परन्तु बाप की दुनिया में अंधेरा जरूर हो गया-एक रात बेटे को कमरे के पंखे से लटका पाया। यह सच भी कितना भयानक है कि यहां लोगों ने सोच लिया है कि सम्पन्नता और प्रतिष्ठा अंग्रेजी स्कूलों के रास्ते से ही आती है। ऐसे में वीर शहीद भगत सिंह याद आते है,उनका बलिदान याद आता है, उनकी जलाई मशाल याद आती है जिसमें आज के नौजवानों के अनेक सवालों के जवाब मौजूद हैं और फिर याद आते है उनके माता-पिता जिन्होंने ऐसे वीर सपूत को जन्म दिए थे।

श्यामल बिहारी महतो